"न वैधो वश्यो वर्षाविकिरति सुधाफलतया यदीयाशो कीर्तिर्मंदमि वपनाशो हवतई"

॥ श्री ॥

वर्षा बिन्दु सीकर

अथवा

कजली कादम्बिनी।

अर्थात्

"अभ्र" तथा "प्रेमघन" उपनामक

उपाध्याय श्री बदरी नारायण शर्म्मा चौधरी

प्रणीत

"संगीत सुधा सरोवर" के "वर्षा बिन्दु" प्रकरण से केवल कजलियों का संग्रह, अथवा उसे बरसनेवाली बादलों की घटा।

द्वितीय संस्करण।

विशेष परिशोधित और परिवर्धित।

मीरजापुर

आनन्द कादम्बिनी यन्त्रालय में मुद्रित हुई।

सं० १९७०।

१००० प्रति] [मूल्य ।) मात्र

Printed and published by PANDIT BADRI NARAYAN
CHOWDHRY at the ANANDA KADAMBINI
PRESS, MIRZAPUR.

निवेदन।

एक समय यह कजली कादम्बिनी बड़े चाव से लिखी और छापी गई थी, परन्तु समय के परिवर्तन से फिर अपनी वह श्रद्धा इसमें न रही, अतएव यह पुस्तक अधिकांश छप-कर भी बरसों यन्त्रालय ही में पड़ी रही और प्रकाशित न हो सकी, जिस कारण इस के अनेक प्रेमियों के बारम्बार मांगने पर भी हम अब तक उन की इच्छा की पूर्ति न कर सके, अत: उन से हम को क्षमा प्रार्थना है।

योंही प्राय: बहुतेरे लोग मुझ से यह पूछा करते थे कि "कज-ली का तत्व क्या है? यह कब से कहां से और क्यों प्रचरित हुई?" विशेष कर एक परम प्रतिष्ठित अंगरेज़ी मासिक पत्र के सम्पादक महाशय के इन प्रश्नों के उत्तर में मैं ने कभी इस विषय में भी लिखने की प्रतिज्ञा की थी, जो स्वतन्त्र रूप से इसमें यथाशक्ति पूरी की गयी है। इस के विषय में यदि कोई सज्जन इस से अधिक लिखकर मुझे देंगे, तो मैं सधन्यवाद उसे भी प्रकाशित करूंगा।

एवम् अनेक प्राचीन कजलियों का संग्रह कर जिन्हों ने हमें देकर इस के बनाने में सहायता दी है, हम धन्यवाद सहित उन की कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं।

बदरी नारायण प्रेमघन।

श्रावण शुक्ल १५
सन् १८१३ ई०।

भूमिका ॥

यद्यपि इस कजली कादम्बिनी का यह द्वितीय संस्करण है, तथापि मूल ग्रन्थ "संगीत सुधा सरोवर।" से वर्षा ऋतु में गाने योग्य गीतों का प्रकरण "वर्षा विन्दु।" के भी इससे पूर्व दो संस्करण हो चुके हैं, अर्थात् प्रथम संस्करण सं० ( ) में और द्वितीय संस्करण में जिस से केवल कजली मात्र संगृहीत होकर यह स्वतन्त्र पुस्तकी छापी गई। क्योंकि कजलियों की संख्या अधिक होने के अतिरिक्त लोग कजलियों ही को अधिक मांगते और बारम्बार यही कहते, कि—केवल कजलियों ही की एक अलग पुस्तक छापिये। विशेष कर हमारे इस नगर में तो इसी की बड़ी मांग रहती, क्योंकि इस को छोड़ लोग दूसरी बर्साती गीतों को तो गाते ही नहीं। इस का प्रथम संस्करण सं० में हुआ था और द्वितीय यह है। प्रत्येक बार छपने में गीतों की संख्या अधिक होती गई और कजलियाँ तो आवश्यकता से भी अधिक हो गईं, इसी से आगामि में अब इसकी और रचना इष्ट भी नहीं है।

इस संस्करण में कई प्रकार की कजलियाँ, कई प्रकार के लोगों और मण्डलियों की रुचि की, कई प्रकार की हिन्दी भाषाओं में रक्खी गई हैं। और इसके अनेक

भेद और विभेद का विधान भी किया गया, कि जिनके अनुसन्धान, और विवेचना पूर्वक विभाजित करने में कुछ न्यून प्रयत्न नहीं करना पड़ा, किन्तु एक बहुत ही आवश्यक और कठिन विषय का निर्णय भी हो गया और अब कदाचित् इस पुस्तकों में सब प्रकार की आवश्यकीय कजलियाँ भी समावेषित हो चुकीं। यद्यपि जिसे वास्तविक कजली कहना चाहिये, वैसी तो इसमें कदाचित् दस पांच से अधिक न होंगी, किन्तु यदि उतनी भी हों तो अवश्य ही कृतकार्य्यता की कारण होंगी, क्योंकि इसकी दशा सामान्य कविता से सर्वथा विलक्षण है। वास्तविक कजली किसे कहते हैं, उसका रूप और तत्व क्या है, यद्यपि यह थोड़े में नहीं कहा जा सकता, तौभी संक्षेप से हम अन्यत्र इसके विषय में भी कुछ लिखेंगे। अस्तु, इस अभिप्राय से कि इस केवल कजली की पुस्तकों में प्रायः सब प्रकार की कजलियाँ लोग ढूढ़ने पर अपनी रुचि के अनुसार दो २ चार २ पा सकें, प्रायः मुख्य २ लय और भाव की सब प्रधान अवसरों और मण्डलियों के गाने और सुनने सुनाने योग्य, यदि अधिकांश स्वभावतः सूफ़ी रचनायें, तो कितनी ही कजलियाँ केवल बहुतेरों के अनुरोध वा उन्हें विशेष इष्ट जानकर लिखी गई हैं। क्योंकि इसका प्रचार अत्यन्त ग्राम्य नर नारियों से लेकर अब अति उत्कृष्ट सभ्य समाज और प्रतिष्ठित महफ़िलों तक में हो गया है।

इस संस्करण के विषय में विशेष कृत्य इतना ही समझा गया था, कि–इधर जो कुछ सुधार और संस्कार समय ने इसके विषय में किया वा अपने को जो इष्ट है, उसके उदाहरण एवम् कुछ नव्य सभ्य समाज की रुचि की संख्या और बढ़ा दी जाय, कि जिस में यह पुस्तिका अब सब प्रकार सुसम्पन्न और पूर्ण हो जाय और जिससे फिर इसके अर्थ कुछ अपना कर्तव्य शेष न रहे, निदान ऐसा करके जब इसे यन्त्रालय में दिया, तो भेद और प्रकार का पार्थक्य विधान भी विशेष उचित अनुमित हुआ, और उसके निपटेरे, और विधान तथा उपनाम परिवर्तन में भी कुछ समय लगने के कारण जिसका सविस्तर आख्यान अन्यत्र हुआ है, यह पुस्तको बरसों तक प्रेस ही में पड़ी थी क्योंकि वर्ष भर में सावन ही में जब इसकी विशेष मांग होती तो इसका स्मरण होता और कजली समाप्ति के साथ इसका कार्य्य फिर असमाप्त पड़ा रहता। अब यह ईश्वरानुग्रह से बहुत दिन के पश्चात् अपने प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित होती है आशा है कि उनके मनोरञ्जन की हेतु हो। इति॥

प्रार्थक,

प्रणेता॥

सूचना।

वा कुछ अपनी कविता की कहानी।

कविता से स्वभावतः अनुराग तो मुझे बचपन ही से था। विद्याध्ययन के समय में भी गद्य की अपेक्षा पद्य को विशेष रुचि से पढ़ता, उत्तम २ छन्दों को कण्ठ करता, अन्य भाषा की पुस्तकों के अर्थ लिखने और कहने में भी प्रायः तुकबन्दी किया करता, वरञ्च कभी २ दूसरी भाषा के छन्दों का अनुवाद भी करता; सहपाठियों को सुनाता और प्रशंसा पाकर प्रसन्न होता था॥

एक बार मेरे यहां के एक साझीदार श्री पंडित रामानन्द जी पाठक जो कि पूज्य चरण मेरे पिता जी के पारिषदों में संस्कृत विद्या के प्रौढ़ विद्वान थे। वैयाकरण, न्याय, साहित्य, वेदान्त आदि शास्त्रों में जिन का अच्छा अधिकार था और जो संस्कृत और ब्रजभाषा के भी उत्तम कवि थे, मुझे संस्कृत पढ़ाते हुए मेरी बातें और युक्तियों को सुनकर कह उठे, कि "अवश्यही आप एक अच्छे कवि होनेवाले से अनुमित होते हैं। अच्छा तो कुछ साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थ भी पढ़िये।" और पढ़ा चले। कवित्तों की समस्यायें भी दे देते, मैं उसकी पूर्ति करता; जिसे सुनकर वे प्रायः प्रसन्न हो मेरी प्रशंसा भी करते, अशुद्धियों को बतलाते, एवम् संशोधन भी कर देते और

कहते, कि—"यह नाम आप का कविता के योग्य नहीं है, अतः कोई दूसरा उपनाम स्थिर कर कविता में रक्खा कीजिये।" किन्तु मैं उसकी उपेक्षा किया करता; यही समझता और कहता, कि दस पांच तुकबन्दियों के अर्थ उपनाम का आयोजन आडम्बर एवम् हास्यास्पद है। इसी भाँति अपने यहां आनेवाले कवि और बन्दी जनों से भी सुने कवित्तों तथा महफ़िल आदि में सुनी ठुमरियों के भी जोड़ जोड़ता तथा जो कुछ कविता करता उसमें यही नाम रखता। इस प्रकार किशोरावस्था के व्यतीत होते वयोवृद्धि के साथही साथ कुछ २ इसकी भी वृद्धि होती चली और इस प्रकार फुटकर तुकबन्दियों की शक्ति मानो एक प्रकार की कविता का रूप धारण कर चली॥

सारांश यौवनावस्था के आविर्भाव के संग मुझे सङ्गीत विद्या में अधिक अनुराग उत्पन्न हो चला और एक गान विद्या विशारद परम प्रिय मित्र के घनिष्ट सम्बन्ध से, विशेषतः उनके आग्रह और प्रसन्नतार्थ प्रचरित गाने की गीतों की रचना का अधिक अवसर उपलब्ध हुआ। क्योंकि मैं जो गाने की चीज़ें बनाता, उन्हीं को देता। वे उसे सीख और सुधार कर गाते, मुझे सुनाते और आनन्द की झड़ी लगाते। यों सामान्य भाव भरी ठुमरी, दादरा, होली आदि भी सुहावनी रागिनी, मनोहर स्वर और रसीली लय से सुसज्जित हो जब मयंक मुख से सुधा धारा के समान कान में आन पड़ती, तो कुछ अकथनीय

आनन्द अनुभव करा देती थी। मैं यदि उनके गाने के बन्धान, स्वरों के सुधार और संस्कार, लय के लालित्य वा गाने की विलक्षणता और विचक्षणता पर वाह! २ कर लट्टू हो जाता, तो वह मेरी रचना चातुरी पर; जिनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले अन्य सज्जन सहृदय सुननेवाले भी बहुत कुछ सराहना कर चलते। यों वह अपनी सामान्य प्रशंसा भी लाखों के मोल से न्यून न जँचती और उत्साहका अंकुर लग्गियों ऊँचा हो जाता। क्रमशः समय ने उन सामान्य भोले भावों को भुलाकर चित्त पर पड़ी सच्ची चोटों की व्यथाओं की कथाएँ कहलाईं और उस दृश्य को भी दूर कर अन्य अनेक अनुभूत वक्तव्यांश व्याख्यान का भी अवसर दिया। इस प्रकार बहुत दिनों गीतों की रचना का सम्बन्ध रहने से उन की संख्या भी अधिक हो गई, उसमें भी विशेष कजलियों की; क्योंकि यह अपने नगर की एक मुख्य गीत वा विशेष रागिनी थी, अतएव अपने समय पर वह कुछ न कुछ कार्य्य अवश्यही ले लेती॥

यद्यपि उक्त प्रिय मित्र के कानों में भी मेरा नाम खटकता, वह भी उपनाम का आग्रह करते, अतः उन के प्रसन्नतार्थ मैं अपना उत्तरार्ध नाम रखने लगा; किन्तु नरायन नाम के एक एतद्देशीय आधुनिक सुकवि के अतिरिक्त अब ब्रज के भी एक परम पूजनीय भक्त और महात्मा श्री नारायण स्वामी की कविताएँ भी मैं ने सुनीं,

तो इसी नाम के दो अन्य अर्वाचीन सुकवि हुए जान कर इस नवीन संशोधन का भी परित्याग करना पड़ा। किन्तु कविता की संख्या अधिक होने से अब अपने को भी उपनाम की आवश्यकता बोध होने लगी। सुतराम् जब २ विचार करता तो यद्यपि कई अच्छे उपनाम स्मरण आते तौभी 'प्रेमघन' के अतिरिक्त चित्त को और न भाते। किन्तु इस श्रेष्ठ नाम के अनुरूप अपने में योग्यता न समझ सहसा इसे भी रखने का साहस न करता और यह प्रश्न नित्य नये रूप में सदैव आगे उपस्थित रहता। विशेष कर श्री काशी में, जो किसी समय रसिक सुकवि और अपने सुहृद् सज्जनों के समागम का मानो केन्द्रस्थल हो रही थी और अपना भी उन दिनों वहां अधिक आना जाना और रहना सहना होता। मेरे माननीय मित्र भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और श्रीमान् राव श्रीकृष्ण देवशरण सिंह (राजकुमार भरतपुर) महोदयादि कई सुयोग्य साहित्य रसिक शिरोमणि तथा उनकी मण्डली के कई अन्य सुयोग्य सज्जन कि जिनके परस्पर मिल जाने पर अधिकांश कविताही की चरचा चलती और प्रायः मेरी कविता के साथही मेरे नाम पर विवाद और उपनाम के लिये आग्रह होता। उत्तर में मैं यही कहता कि निस्संदेह पूरा नाम किसी प्रकार की कविता में रखने से बहुत ही बेतुका जँचता है, किन्तु क्या कहूँ, कि कोई उपनाम 'प्रेमघन' के अतिरिक्त मुझे नहीं भाता और यह नाम अति श्रेष्ट

है। यद्यपि वह सब लोग सुनकर "बहुतही उत्तम और उचित है।" कह इसे निश्चित करने का आग्रह करते, तौभी उत्साह न होता॥

भारतेन्दु के स्वर्गारोहण के पश्चात् उस मण्डली के अनेक सज्जन तथा अन्य कई नवीन सुकवियों का भी समावेश श्री गोपाल मन्दिर के अधिष्ठाता वल्लभ कुलाचार्य गोस्वामी श्रीमान् श्री जीवन लालजी महाराज एवम् कांकरौली नरेश श्रीमान् गोस्वामी श्री बालकृष्ण लालजी महाराज के वहाँ विराजमान रहने पर प्रायः उक्त मन्दिर में भी वैसाही होता, वहां भी विशेष कर कविताही की झड़ी लगती और मेरी कविता के साथही यह पुराना प्रश्न भी पुनः पूर्ववत उठता। मैं भी उन्हीं आपत्तियों की पुनरावृति करता और उपस्थित सभ्यजन भी पूर्ववत मेरी शंका व्यर्थ और उपनाम उचित कहा करते। किन्तु एक दिन मेरे एक कवित्त पढ़ने पर उस माननीय मण्डली में इस विषय में विशेष आन्दोलन हो यह स्थिर हो गया और एक ऐसे मुखारविन्द से आज्ञा हुई जिसे सुनकर मानही लेना पड़ा। जिसका सारांश यह था, कि "तुम सर्वथा इसके योग्य हो। तुम्हें शपथ है कि जो अब कविता में फिर अपना पुराना नाम रक्खो। वरञ्च कम्म दो कवित्त इसी नाम से रचकर सुनाओ।" मैंने भी अंगीकार कर वैसाही किया और साधुवाद भी पाया। मैंने यह भी निवेदन किया, कि—आज तक पुरानी

कविताओं में जो नाम रख चुका हूं उसके लिये क्या करना उचित है? आज्ञा हुई कि "अब से जो कविता पुनः छपे उसमें पुराने नाम के स्थान पर उपनाम रखते जाओ। क्योंकि अन्यथा आगामि में इससे बड़े भारी भ्रम उत्पन्न होने की आशंका है।" निदान तब से ऐसाही करता चला और तदनुसार इस पुस्तकों में भी अनेक प्राचीन कजलियों में नाम के स्थान पर उपनाम का सन्निवेश कर दिया गया। इतिशम्॥

निवेदक—

श्री बदरी नारायण प्रेमघन।



॥ श्रीः ॥

कजली कादम्बिनी।

घनश्यामायनमः।

"कलानिधिसहायिनी लसदलोलसौदामिनी
मदङ्गतरवलम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी"

—:०:—

छप्पय।

कृष्ण कलित कादम्बिनी सरिस सुन्दर सूरत।
कृष्ण कलित कादम्बिनीव छबि कुन्तल पूरत॥
कृष्ण कलित कादम्बिनी सु कमरी दुख दूरत।
कृष्ण कलित कादम्बिनी नयन लिय गन घूरत॥
सो कृष्ण कृष्ण कादम्बिनी लौं करुना बरसाइए।
हे कृष्ण! कृष्ण कादम्बिनी की सोभा सरसाइए॥

दोहा।

जय जय जय घनस्याम सम सोभा तन घनस्याम।
राधा रानी दामिनी जा सँग लसत मुदाम॥

मंजुल मन मोहत सदा बरसत प्रेम अथोर ।
जोहि जतन जोगादि जेहि नाचत मुनि मन मोर ॥
जुगल जुगल पद जलज मैं परम प्रेमघन प्रेम ।
हरन सकल कलि कलुष कुल जावत निश्चल नेम ॥

:o:

कजली ।

प्रधान प्रकार ।

अर्थात् रागिनी वा गीत का मूल वा मुख्य रूप ।

• सामान्य लय ।

"बरसै बदरा के बुँदवा ठाढ़ी भीजै गुजरी" की चाल ।

जय जय प्यारी राधा रानी, जय जय मन मोहन बृजराज ॥
दोउ चकोर, दोउ चन्द, दोऊ घन, दोउ चातक सिरताज ।
दोऊ अमल, कमल अलि दोऊ सजे सजीले साज ॥
दोऊ प्रेम भाजन, दोउ प्रेमी, दोऊ रूप जहाज ।
सुकबि प्रेमघन के मिलि दोऊ सबै सँवारौ काज ॥ १ ॥

ठूमरी ।

संस्कृत भाषा भूषित ।

जय जय राधा वदन सरोरुह मधुकर मोहन वनमाली ॥
बिहरसि युवति समूह समेतो नव शोभा शाली ।
कुसुमित बकुल कदम्ब निकुञ्जे गुञ्जति भ्रमराली ॥
कंस विमर्दन कालियमन्थन कुञ्चित कच जाली ।
प्रवरतु सदा प्रेमघन हृदि तव नव पद प्रेम प्रणाली ॥२॥

तीसरी ।

हे हरि! हमरी ओरियाँहू अब फेरौ तनिक दया दृगकोर ॥
राधा रमन, समन बाधा, नट नागर, नन्द किसोर ।
मुनिमन मानस के मराल, ब्रज जुबती जन चितचोर ॥
अधम उधारन, पतितन पावन, अवगुन गनौ न मोर ।
बरसहु नित निज प्रेम प्रेमघन! मन मैं सरस अथोर ॥३॥

चौथी ।

सोर करत चहुँ ओर मोर गन चल सखि! वृन्दावन की ओर ।
छाय रहे घनस्याम अवसि उत कहिं नाचत मन मोर ॥
ललचत लोचन चातक सम छबि पीयन हित चित चोर ।
बरसत सो घन प्रेम प्रेमघन जनु आनन्द अथोर ॥ ४ ॥

गृहस्थिनियों की लय ।

सिर पर सूही रे ओढ़नियाँ ओढ़ि खेलै कजरी ॥
हिलि मिलि के झूला सँग झूलैं सब सखी प्रेम भरी ।
सजी प्रेमघन सावन के सुख मिरजापुर नगरी ॥ ५ ॥

दूसरी ।

रिम झिम बरसै रे बादरिया मोरी चादरिया भीजी जाय ।
कहाँ जाय अब हाय बचौ मैं! दैया! जिय घबराय ॥
लै छाता सर, छाती से लगि, प्रीति रीति सरसाय ।
पिया प्रेमघन! पैयाँ लागौं बेगि बचावो आय ॥ ६ ॥

नटिनो* की लय ।

बन बन गाय चरावत घूमो ! ओढ़े कारी कमरी ।
तुम का जानो रस की बतियाँ ? हौ बालक रगरी ॥
बेईमान ! दान कस मांगत गहि बहियाँ हमरी ?
सीखौ प्रेम प्रेमघन ! अबहीं, छोड़ ! मोरी डगरी ॥ ७ ॥

दूसरी ।

नैना पापी मानैं नाहीं प्यारे ! ये काहू की बात ।
लाख भाँति समझाय थके हम करि करि सौ सौ घात ॥
चलत छाँड़ि कुल गैल बने बिगरैल नहीं सकुचात ।
छके प्रेममद मस्त प्रेमघन तकत यार दिन रात ॥ ८ ॥

रंडियों † की लय ।

बांके नैनों ने रसीले ! तोरे जदुआ डाला रे ।
मुख मयंक पर मण्डल मानौ कान सजीले बाला ॥
मोर मुकुट सिर अधर मुरलिया गर बिलसत बनमाला ।
प्रेम प्रेमघन बरसावत कित जात नन्द के लाला ॥ ९ ॥

दूसरी ।

तोरी गोरी रे सूरतिया प्यारी प्यारी लागै रे ॥

---

* नट नामक एक जङ्गली जाति की स्त्रियाँ जो नाचने, गाने और वेश्या वृत्ति उठाने से यहां एक प्रकार मध्यम श्रेणी की रण्डी वा नर्तकी वारवधू बन गई हैं, जिनकी कजली गाने में कुछ विशेषता है, और जिसका कुछ वर्णन इस पुस्तक के अन्त में "कजली की कजली" में भी हुआ है।

† नर्तकी वेश्या वा घुंघुरूबन्द पतुरिया ।

ानन्द मन्द मुसुकानि लखे उर पीर काम की जागै ।
ारसावत रस मनहुँ प्रेमघन बरबस मन अनुरागै ॥ १० ॥

तीसरी ।

मारी कैसी तू ने जनियां ! बांके नैनों की कटार ॥
पलक म्यान सों बाहर कर कर दीन करेजे पार ।
व्याकुल करत प्रेमघन मन हक नाहक हाय ! हमार ॥११॥

बनारसी लय ।

तोहसे यार मिलै के खातिर सौ २ लार लगाईला ॥
गंगा रोज नहाईला, मन्दिर में जाईला ।
कथा पुरान सुनीला, माला बैठि हिलाईला हो॥
नेम धरम औ तीरथ बरत करत थकि जाईला ।
पूजा कै कै देयतन से कर जोरि मनाईला हो ॥
महजिद में जाईला, टाढ़ होय चिल्लाईला ।
गिरजाघर घुसिकै लीला लखि लखि बिलखाईला हो ॥
नई समाजन की बक बक सुनि सुनि घबराईला ।
पिया प्रेमघन मन तजि तोहके कतहुँ न पाईला हो ॥१२॥

गुगडानी लय ।

नैन सजीले बैन रसीले छैल छबीले तेरे रे ॥
नित टरकाय, हाय ! क्यों मारत, दिलबर प्यारे मेरे ।
यार प्रेमघन ! बेदरदी छबि देखलावत नहिं एरे ॥ १३ ॥

दूसरी।

इक दिन तोरे रे जोबन पर चलिहैं छूरी तरवार।
रतनारे मतवारे प्यारे, दूनौ नैन तोहार॥
धानी ओढ़नी सोहै सीस पर, अँगिया गोटेदार।
यार प्रेमघन ललचावत मन बरबस हाय हमार॥१४॥

बनारसी लय।

हम तो खोजि २ चौकाली चिड़िया रोज फँसाईला।
जहाँ देखि आई, सुनि पाई, बसि डटि जाईला हो॥
धोखा चारा चाह, नर्तन के जाल बिछाईला।
पट्टी टट्टी ओट नैन कै चोट चलाईला हो।
कम्पा दाम लगाईला, चटपट खिड़पाईला॥
यार प्रेमघन! यही तार में सगतौं धाईला हो॥ १५॥

दूसरी।

बहरी ओर जाय बूटी के रगड़ा रोज लगाईला॥
बूटी छान, असनान, ध्यान कै, पान चबाईला।
हवड पेल चेलन के कुश्ती खूब लड़ाईला हो॥
बैरिन सारन देखतहीं घुड़री, गुर्राईला।
त्यूरी बदलत भर में लै हरबा सटि जाईला हो॥
कैसौ अफलातून होय नहिँ तनिक डेराईला।
गुरू प्रेमघन! यारन के संग लहर उड़ाईला हो॥ १६॥

नवीन संशोधन।

आये सावन, सोक नसावन, गावन लागे री बनमोर॥
घहरि २ घन बरसावन, छबि छहरि छहरि छहरावन।
चातक चित ललचावन, चहुँ ओरन चपला चमकावन॥
संजोगिन सुख सरसावन, बिरही बनिता बिलखावन।
अधिक बढ़ावन प्रेम, प्रेमघन पावस परम सुहावन॥१७॥

अन्य।

आये सावन, मदन जगावन, बिरह बढ़ावन ऐ आली॥
धावन लागीं लखो बरसावन, घेरि घटा घन काली।
तावन लागी तनै मनभावन, बिन चपला उँजियाली॥
गावन लागीं रिझावन निज, पिय जिय नव जोबन वाली।
कारन कौन प्रेमघन अजहूँ, नहिं आए बनमाली॥१८॥

साखी बद्ध :

घिरि घिरि आए बदरा कारे, प्यारे पिय बिन जिय घबराय॥
आह दई! बचिहैं कला कौन बियोगी प्रान।
चहुँ ओरन मोरन लगे अबहीं सों कहरान।
झिल्लीगन झनकारत, मारत बैरी दादुर सोर सुनाय॥
अँधियारी कारी निसा निपट डरारी होय।
बाढ़त बिरह बिथा जुरी जोति जोगिनी जोय।
पी! पी! रटत पपीहा पापी सुनि धुनि धीर धरो नहिं जाय॥
इन्द्र धनुष धनु, बूँद सर बरसावत यह आज।

बरखा ब्याज बनो बधिक मदन चल्यो सजि साज।
सहत न बनत पीर अब आली! कीजै कैसो कौन उपाय॥
चखचौंधी दै चंचला चमकि रही चढ़ि चाव।
करि करवाली काम के करवाली उर धाव।
पिया प्रेमघन सों कहु आली आवैं, मोहिं बचावैं धाय॥१९॥

जन्माष्टमी की बधाई।

धनि धनि भाग जसोदा तेरो! जायो जिन अबिनासी बाल॥
सकल सुरन पूजित पद पल्लव, असुर कंस को काल।
सुक, सनकादिक, नारद, मुनि मन मानस मंजु मराल॥
तजि गोलोक, आय गोकुल, जगदीस भयो गोपाल।
सुकबि प्रेमघन ब्रज मैं छायो मंगल मोद बिसाल॥ २० ॥

झूले की कजली।

झूलन कालिन्दी के कूलन झूलन चलिये नन्दकिसोर॥
बृन्दाबन कुसुमित कदम्ब की कुञ्जनि नाचत मोर।
कूकत कोइल, चहँकत चातक, दादुर कीने रोर॥
सरस सुहावन सावन आयो, घहरत घिरि घन घोर।
अँधियारी अधिकात, चञ्चला चमकि रही चित चोर॥
मन भाई छाई छबि सों छिति हरियारी चहुँ ओर।
लहरावत द्रुम लता चलत पुरवाई पवन झँकोर॥
चलौ उतै जनि बिलम करौ मन ठानत हठ बरजोर।

पिया प्रेमघन! बरसावहु रस दै आनन्द अघोर ॥ २१ ॥

दूसरी ।

झूलत राधा गोरी के सँग सोहत सुघर सलोने स्याम ॥
गल बाहीं दीने दोऊ राजत, मानहुँ रति अरु काम ।
छहरत छबि छन छबि मिलि ज्यों घनस्याम नवल अभिराम ॥
मन मोहत मिलि ज्यों कालिन्दी, सुरसरिता इक ठाम ।
पाय प्रेमघन चन्द लगत प्रिय जथा जामिनी जाम ॥२२॥

तीसरी ।

झूलैं राधा सँग बनमाली, आली! कालिन्दी के तीर ॥
नचत कलापी कदम कुंज, किलकारत कोकिल, कीर ।
बिकसे जहां प्रसून पुंज, गुंजरत भौंर की भीर ॥
लचत लंक लचकीली लचकत, प्यारी होति अधीर ।
निरखि प्रेमघन प्रेम बिबस ह्वै भरत अंक बलबीर ॥२३॥

चौथी ।

प्यारी पावस की ऋतु आई, झूलत पिय के संग प्यारी ।
राजत रतन जरित हिंडोर पर गर बहियां डारी ॥
निरखि सुहावन सावन घन की घिरी घटा कारी ।
नाचत मोर, कोकिला, चातक चहँकत हिय हारी ॥
बन प्रमोद सुन्दर सरजू तट भई भीर भारी ।
रघुनन्दन संग जनक नन्दनी मिलि सखियाँ सारी ॥
गावत कजरी औ मलार सावन बारी बारी ।

बरसत जुगल प्रेमघन रस हरसत जनु मन बारी ॥ २४ ॥

उर्दू भाषा।

आई क्याही भाई भाई दिल को यह प्यारी बरसात ॥
घिरकर अब्रि-सियः ने बनाया इकसाँ दिन औ रात ।
अजब नाज़ अन्दाज़ दिखाती बिजली की हरकात ॥
छाई सब्ज़ी ज़मीं प' गोया बिछी हरी बानात ।
खिले गुले गुलशन, क्या लाई कुद्रत है सौग़ात ॥
शुरू रक्से ताऊस हुआ सहरा में, शोरि नग़मात ।
गातीं झूला झूल झूल कर नाज़नीन औरात ॥
चलो सैर को साथ जानि-जाँ मानो मेरी बात ।
बरस रहा है "अब्र" प्रेमघन गोया आबि-हयात ॥ २५ ॥

दूसरी ।

ग़ैरों से मिल २ कर मेरा क्यों दिल जिगर जलाते हो ॥
क़सम खुदा की साफ़ बता दो क्यों शरमाते हो ।
यार प्रेमघन "अब्र" मज़ा क्या इसमें पाते हो ॥ २६ ॥

तीसरी ।

वारी २ जाऊँ तुझ पर दिलबर जानी सौ २ बार ।
दिखा चाँद सा चिहरा मत कर तीरे निगह के वार ॥
इक बोसे के लिये सताते हो करते तकरार ।
ख़ूब प्रेमघन "अब्र" मिले तुम हमें अनोखे यार ॥ २७ ॥

द्वितीय भेद।

मिलतो लय।

"ककरेजवा रँगा दे मोरे बाँके जमादार" की चाल।

प्यारी! लागत तिहारी छबि, प्यारी प्यारी ना।
गोरे गालन पैं लोटत लट, कारी कारी ना॥
मुस्कुरानि मन हरै मोहनी, डारी डारी ना।
मनहुँ प्रेमघन बरसै तोपैं, वारी वारी ना॥ २८॥

तृतीय भेद।

"धीरे धीरेहो भुलावो मोरी प्यारी ललना" की चाल।

ऋतु आई बरखा की नियराई कजरी॥
सब सखियाँ सहेलिन मचाई कजरी।
लगीं चारो ओर सरस सुनाई कजरी॥
नभ नवल घटा की छबि छाई कजरी।
पिया प्रेमघन! आओ मिलि गाई कजरी॥ २९॥

चतुर्थ भेद।

ठाढ़ की लय में।

"तोड़के सोहै हमरी सुन्दरी कुसुम कै चुनरी" की चाल।

सैयाँ सौतिन के घर छाए, सूनी सेजिया न सोहाय॥
गरजै बरसै रे बदरवा, मोरा जियरा हरपाय।
बोलै पापी रे पपीहा, पीया! पीया! रट लाय॥
बरजे माने ना जोबनवाँ; दीनी अंगिया दरकाय।

पिया प्रेमघन बेगि बुलावो अब दुख नाहीं सहि जाय ॥ ३० ॥

पञ्चम भेद ।

अथवा नवीन सम्शोधन ।

गुइयां देखो री कन्हैया रोकै मोरी डगरी ॥ टे० ॥
ओढ़े कारी कमरी, सिर पर टेढ़ी पगरी ;
गारी बंसी बीच बजावै देखौ ऐसो रगरी ॥
भाजै मारि मारि कँकरी, रोजै फोरै गगरी ;
यह अन्धेर मचाये घूमै सारी गोकुल की नगरी ॥
लखिकै सुन्दर गूजरी, तजिकै सखियाँ सगरी ;
गर लगि मेरे सब रस लूटै दैया ! कारो ठगरी ॥
कीजै जतन कवन अबरी, लखि लखि हंसै सबै जगरी ;
प्रेमी बनो प्रेमघन घूमै मेरे संग संग लगरी ॥ ३१ ॥

द्वितीय विभेद ।

विकृत लय ।

मैना मैना रे मैना—की चाल ।

जाऊँ तोरे संग मुरारी—मैना ! मैना ! रे मैना ! ॥ टे० ॥
मैना ! मानूँ बात तिहारो—मैना ! मैना ! रे मैना !
मैना ! जाऊँ घरवाँ मारी— मैना ! मैना ! रे मैना !
मैना ! जाऊँ तोपैं वारी—मैना ! मैना ! रे मैना !
मैना ! करिहों तोसे यारी—मैना ! मैना ! रे मैना !

मैना ! निरी प्रेमघन बारी—मैना ! मैना ! रे मैना ! ।
मैना ! ब्याही तेरी नारी— मैना ! मैना ! रे मैना ॥ ३२ ॥

ठूमरी ।

मैना सुनिहौं गाली, बोलो बात सँभाली रे मैना ।
मैना तेरी तरह कुचाली, सुन बनमाली रे मैना ॥
मैना ! तेरे घर की पाली, सरहज साली रे मैना ! ।
मैना ! लेवँ कान की बाली, झूमकवाली रे मैना ! ॥
मैना ! ऐसी भोली भाली, रीझूँ हाली रे मैना ! ।
मैना ! प्रेम प्रेमघन घाली, बैठी खाली रे मैना ! ॥३३॥

नवीन संशोधन ।

नागरी भाषा ।

अर्थात् खरी हिन्दी, अथवा खड़ी बोली ।

सजकर है सावन आया, अतिही मेरे मन को भाया ।
हरियाली ने छिति को छाया, सर जल भरकर उतराया ।
फूला फला बिटप गरुआया, लतिकाओं से लिपटाया ।
जंगल मंगल साज सजाया, उत्सव साधन सब पाया ।
जुगनू ने जो जोति जगाया, दीपक ने समूह दरसाया ।
झिल्लीगन झनकार मचाया, सुर सारंगी सरसाया ।
घिरि घन मधुर मृदंग बजाया, तिरवट दादुर ने गाया ।
नाच मयूरों ने दिखलाया, हर्षित चातक चिल्लाया ।
सखियों ने मिलि मोद मनाया, दिन कजली का नियराया ।

पिया प्रेमघन चित ललचाया, झूला कभी न झुलवाया।

चाल।

तृतीय विभेद।

स्थानिक ग्राम्य भाषा।

अर्थात् बिहारी हिन्दी अथवा पछाँही बोली।

विकृत लय।

फुलवा ऊमरी के रे डरिया चाने चीने जाय—की चाल।

पिय परदेसवाँ छाये रे—मोरी सुधिया बिसराय ॥
सूनी सेजिया साँपिन रे—मोरा जियरा डँसि डँसि जाय ॥
सब सजि साज पिया कै रे—ननदी छतियाँ ले लगाय ॥
रसिक प्रेमघन को किन रे—सौतिन लीनो बिलमाय ॥३५॥

दूसरी।

आए सखी सवनवां रे—सैंयां छाये परदेस ॥
अस बेदरदी बालम रे—नाहीं पठवै सन्देस ॥
उमड़ै अबतौ जोबना रे—नाहीं बालापन को लेस ॥
हेरबै पिया प्रेमघन रे—धरि जोगीनीयां कै भेस ॥ ३६ ॥

नवीन संशोधन।

सैयाँ अजहूँ नाहीं आय! जियरा रहि २ के घबराय ॥
घिरि घन भरे नीर नगिचाय। बरसैं, पीर अधिक अधिकाय॥
दुरि २ दमकै दामिनि धाय। मोरा जियरा डरपाय ॥
सोही हरियारी छिति छाय। बिच २ बीरबधू बिलसाय ॥

रवा नाचै हिय हरखाय। पपिहा पिया ! २ चिल्लाय ॥
र पग मेंहदी रंग रँगाय । सूही सारी पहिरि सुहाय ॥
खियां झूलैं कजरी गाय। मैं घर बैठि रही बिलखाय ॥
झिल्लीगन झनकार सुनाय। दादुर बोलैं रोर मचाय ॥
पिया प्रेमघन ल्यायो, हाय ! अब दुख नाहीं सहि जाय ॥

चतुर्थ विभेद।

ठूमरी ।

विकृत लय और छन्द।

ललना ।

सुधि बुधि मोरी काहे बिसराये ललना—की चाल।

छेड़ो छेड़ो न कन्हाई मैं पराई ललना ॥
नोखे छैल भए तुमही", फिरो घूमत बनि दुखदाई ललना ॥
हम चालन लालन अनेक, बस करि कलंक कुल लाई ललना।
पिया प्रेमघन माधव तुम, हठि करत हाय ठगहाई ललना ॥

दूसरो ।

तोरी साँवरी सूरत लागै प्यारी जनियां ॥
तोरी सब सज धज अति न्यारी जनियां ॥
मतवारी अँखियन की चितवन सों जनु हनत कटारी ज० ॥
मंद मंद मुसुकाय मोहनी मंत्र मनहुँ पढ़ि हारो जनियां ॥
मीठी बतियन मोहत मन सब सुध बुधि हरत हमारी ज० ॥
मनहुँ प्रेमघन बरसत रस छबि भूलत नाहिँ तिहारी ज० ॥

झूलन।

नवीन संशोधन।

झूलै नवल लला सँग नवेली ललना।
ताक झाँक औ झुकनि मैं छूटत छल ना॥
झोंका लहि अकुलाय, प्यारी अगन दुराय;
हरी आय जाय, अचल कहूँ ते टल ना॥
पिय लगै हिय आय, तिय जिय सकुचाय;
लेन चहत बचाय, पै चलत बल ना॥
जौ लजाय, अनखाय, बांकी भौंहन चढ़ाय;
जात जुवति रिसाय, तौ परत कल ना॥
फेरि नैनन मिलाय, मन्द मन्द मुसुकाय;
प्रेमघन बरसाय, रस तजै पल ना॥ ४० ॥

सारी बलमा*

मिरज़ी धुन।

सारी धानी मोल मँगावः कुरती करौंदिया रंगवावः।
चुनिके हमके पहिरावः मोरे बांके बलमा॥
रोजै पिया प्रेमघन आवः झूठै प्रेम जाल फैलावः।
फांसै मैं सावन बितावः मोरे बांके बलमा॥ ४१ ॥

नवीन संशोधन।

नागरी भाषा वा खरी हिंदी।

ग्रीषम हुआ दूर दुखदाई, प्यारी वर्षा है जो आई;

---

*यथार्थ तुक संयुक्त टेक "सामाजिक संगीत" प्रकरण मे देखो।

मानो देते हुए बधाई, मोरों ने कलकूक सुनाई ॥
काली घटा घेरती आती, चित को चातक के ललचाती ;
बिजली का है पटा फिराती, क्या दिखलाती सुन्दरताई ॥
छाई धरती पर हरियारी, निकलीं बीरबधूटी प्यारी ;
खिल २ कर फूलों की क्यारी, उपवन की छबि अधिक बढ़ाई ॥
नीर प्रेमघन घन बरसाते, भरकर झील ताल उलराते ;
दादुर भी रट लाते भाते, बहती बेग भरी पुरवाई ॥

——— ::o ———

दूसरा प्रकार ।

मनोहर मिश्रित भाषा ।

अर्थात् निखरी हिन्दी वा खड़ी बोली ।

सामान्य लय ।

"कौने रङ्ग सुगवा कौन रङ्ग मोतिया" की चाल ।

मैं छारी कहाँ जाऊँ अकेली, डगर भुलानी रे सांवलिया ।
कुञ्ज गली में आय अचानक, बहुत हेरानी रे सांव० ॥
डगर बता दे गरवाँ लगा ले, निज मनमानी रे सांव० ।
चेरी हूँ जी से मैं तेरी, रूप दिवानी रे सांवलिया ॥
सुन जा हाय! तनिक तो मेरी, प्रेम कहानी रे सांव० ।
ये अंखियां तेरी अलकन में, हैं उलझानी रे सांवलिया ॥
काह बिचारै आह उतै तू, भौंहन तानी रे सांवलिया ।
पिया प्रेमघन आओ बेगहिं, दिलबर जानी रे सांव० ॥ ४३ ॥

गृहस्थिनी की लय ।

साँवरी सुरतिया नैन रतनारे, जुलुम करैं गोरिया रे तोरे जोबना
मोहत मन तोरे दाँते कै बतिसिया, करत चितचोरिया रे तोरे
देखतहीं हिय पैठत मनहुँ, कटरिया कै कोरिया रे तोरे जो०
रसिक प्रेमघन को मन छोरि, लेत बरजोरिया रे तोरे जो० ॥

दूसरी ।

कारी घटा घिरि आई हरारी, दुरि २ दमकै री दामिनियाँ ॥
प्यारी पुरवाई सुखदाई, भाई चंचल गति गामिनियाँ ॥
झिल्ली दादुर मोर पपीहा, सोर मचावैं जुरि जामिनियाँ ॥
बिहरत संजोगिनी प्रेमघन बिलखत बिरही जन कामिनियाँ ॥

नटिनी की लय ।

नैन तोरे बांके रे गूजरिया ॥
चितवत हीं चित ऊपर परत, आय जनु छांके रे गूज० ॥
कहर काम की करद समान, बान सैना कै रे गूजरिया ॥
ऐसो अजब घाव ये करत, लगत नहिं टाँके रे गूजरिया ॥
बरसत प्रेम प्रेमघन कौन मंत्र पढ़ि झाँके रे गूजरिया ॥४६॥

दूसरी ।

बोलावै मोहिं नेरे रे सांवलिया ।
फिरत मोहिं घेरे रे सांवलिया ॥
रोकत जमुना तट पनिघटवाँ, साँझ सबेरे रे सांवलिया ।

भाजत धाय हाय मुख चूमि, मिलत[illegible] रे सांव० ॥
कौन बचावै अब मोहिं, कोऊ सुनत नहिं टेरे रे सांव० ।
मेरी गलिन अली वह लँगर, करत नित फेरे रे सांव० ॥
रसिक प्रेमघन मानत नाहिं, कहै वह मेरे रे सांव० ॥४७॥

रंडियों की लय ।

सुरत तोरी प्यारी रे सांवलिया ॥
कारी कजरारी मतवारी, आँख रतनारी रे सांवलिया ॥
चितवत काम कटारी सरिस, हाय हनि मारी रे सांव० ॥
बरसत रस मीठी मुसुकानि मोहनी डारी रे सांवलिया ॥
रसिक प्रेमघन प्यारे यार! चाल तोरी न्यारी रे सांव० ॥४८॥

ब्रजभाषा ।

अर्थात् खड़ी हिन्दी वा खड़ी बोली ।

जैसो तू त्यों प्यारी तिहारी, लगो भली यारी रे साँव० ॥
कारे कान्हर के हित कुबजा, बिधि नै सँवारी रे साँव० ॥
ज्यों चरवाहो तू त्यों चेरी, वह दई-मारी रे साँवरिया ॥
राधा रानी सँग नहिं सोहै, मीत मुरारी रे साँवरिया ॥
प्रेम प्रेमघन सम जन पाय, होय सुखकारी रे साँव० ॥४९॥

झूलन ।

प्यारी की झूलनि में प्यारी, झुकि झुकि झूले हो झूलनियां
गोरे बदन सीप-सुत सहित, लखे हिय हूले हो झूलनियां
खेलत सुक जनु ससि की गोद हरखि, कबि तूले हो झूल०

बिकसे बारिज पैं के कलित, कुन्द कबि फूले हो झूलनियां
झूमि झूमिके चूमत अधर, माधुरी मूलै हो झूलनियां ॥
बरसत मनहुँ प्रेमघन सुधा बुन्द नहिँ भूले हो झूल० ॥५०॥

गोवर्धनधारण ।

निज "अनुराग बिन्दु" से संग्रहीत ।

डगमगात गिर, गिरै न हाय ! देख ! गिरधारी रे साँवलिया ॥
थरथरात हिय समझत भार, लगै डर भारी रे साँव० ।
बीते सात रात दिन अबतौ, बरसत बारी रे साँवलि० ।
गोबरधन धरि कर पर राख्यो, तू बनवारी रे साँव० ।
धन्य २ भाखैं गोपी सुधि, सकल बिसारी रे साँवलिया ।
चूमत स्याम स्याम की बहियां, करि रतनारी रे साँव० ।
धन्य जसोमति जिन तोहि जायो, जग हितकारी रे साँ० ।
नन्द जसोमति मिलि मींजत भुज, सुतहि दुलारी रे साँ० ।
चिरंजीवो प्यारे तुम ब्रज के, बिपति बिदारी रे साँ० ।
बाधा हरनि हरिहु की भाखत, राधा प्यारी रे साँव० ।
पीर तिहारी सहि न जात अब, मीत मुरारी रे सां० ।
बुन्द न परत देखि कुत्र सुरपति, भागे हारी रे सांव० ।
जय जय जपति प्रेमघन सुर गन, हरखि उचारी रे सां० ॥ ५१ ॥

नवीन संशोधन ।

निज "विनय बिन्दु" से संग्रहीत ।

नेक नजर कर नेक निहार, आस मोहिँ तोरी रे साँवलिया ॥

हौं अति नीच, पाप के कीच, फँसी मति मोरी रे सां० ॥
निसु दिन काम, क्रोध सों काम, लोभ की खोरी रे सां० ॥
तुम कहँ भूलि, विषय की धूलि, सराहि बटोरी रे सां० ॥
पाहि! प्रेमघन, पतितन पावन! लखि निज ओरी रे सां० ॥५२

दूसरी ।

भूली सुधि बुधि नागर नटकी, लखि लट लटकी रे सांव० ॥
गोरे गाल, चन्द पर श्याम, व्याल जनु भटकी रे सांव० ॥
अतिही प्यास, अमृत की आस, आय जनु अँटकी रे सां० ॥
निरखनहार, देत विष धार, काढ़ि निज घटकी रे सां० ॥
मिलु अभिराम, प्रेमघन स्याम, पीर हरि टटकी रे सां० ॥५३॥

तीसरी ।

संग चलि चलिके, हिये हलि हलिके, टगे छलि २ के रे सां० ॥
लै रस हाय! गये अनखाय, रहे टलि टलिकै रे सांव० ॥
सूखी प्रीति, बेलि सब रीति, फूलि फलि फलिकै रे सां०॥
गुनि २ गाथ, प्रेमघन हाथ, रही मलि मलिकै रे सां० ॥ ५४॥

चौथी ।

भल छल किहले छली! गनि गनिकै, मीत बनि बनिकै रे सां० ॥
लखि ललचाय, मन्द मुसकाय, प्रेम सनि सनिकै रे सांव० ॥
करि बेचैन, दिहे सर नैन, सैन हनि हनिकै रे सांव० ॥
लै मन हाथ, छोड़ि फेरि साथ, चले तनि तनिकै रे सां० ॥
भौंहन तान, प्रेमघन मान, ठान ठनि ठनिकै रे सां० ॥ ५५॥

विकृत विशेषता

खँगरीवाली की लय।

औरन से रीति, राखि किहले अनीति, तैं देखाय झूठो
प्रीति, फँसाये जटि जटि कै रे सांवलिया॥
नैनवाँ नचाय, मन्द मन्द मुसुकाय, लिहे मनहिँ लुभाय,
ठाट ठटि ठटिकै रे सांवलिया॥
गोकुल गलीन, लखि सहित अलीन, बिनये तैं बनि दीन,
साथ सटि सटिकै रे सांवलिया॥
ऐरे चित चोर! चित चोरि चहुँ ओर, किहे सोर नित
मोर, नाव रटि रटिकै रे सांवलिया॥
प्रेमघन पिया, लगि सौतिन के हिया, तरसाये मोर
जिया, बात नटि नटिकै रे सांवलिया॥ ५६॥

ठूमरी।

कहि नहिँ जाय, कर मीजि पछताय, रही मन समझाय,
तैं सताये दम दै दै रे सांवलिया॥
देखि धाय धाय, बरबस पास आय, झूठी बातन बनाय,
बिलमाये कर धै धै रे सांवलिया॥
ऐँठि इतराय, मन्द २ मुसुकाय, बाँके नैनवाँ नचाय कै,
चोराये चित लै लै रे सांवलिया॥
प्रेमघन हाय! कबहूँ न गर लाय, मिले मन हरखाय,
तैं छली छल कै कै रे सांवलिया॥ ५७॥

उर्दू भाषा।

दिल तुझपर है आया जान! फिरा करता हूँ मैं हैरान;
हज़ारों लिए हुए अरमान, बता मिलने का कोई ज़रिया।
आऊँ मैं किस तर्ह किधर से, मुश्किल महज़ गुज़रना दर से;
है अफ़सोस तेरे भी घर से, नहीं हिलने का कोई ज़रिया।
बाहर "अभ्र" प्रेमघन हद, के पहुँचा हिज्र क़िस्मते बद के;
बाइस, नहीं गुले मक़सद के, मेरे खिलने का कोई ज़रिया।

दूसरी।

तेरे फ़िराक़ में हैरानी, हमको ऐसी पड़ी उठानी;
सुन तो उस्की ज़रा कहानी, करम कर अब ऐ दिलबर जानी।
रूए रौशन का दीदार, दिखलाने में भी इन्कार;
करता है क्यों तू हर बार, बता तो सबब ऐ दिलबर जानी।
हुस्ने दिल-फ़रेब यः जान, है थोड़े दिन का मिहमान;
ढलने पर शबाब के शान, रहेगी कब ऐ दिलबर जानी।
घिरकर "अभ्र" प्रेमघन! छाये, सैरे गुलशन के दिन आये;
तूभी साथ अगर मिल जाये, मज़ा हो तब ऐ दिलबर जानी।

द्वितीय भेद।

न्यूनता।

तोहे तो हर लागे रे बेइमनवाँ॥
नैन लड़ाय लुभाय, फेरि सुधि त्यागे रे बेइमनवाँ॥
मन्द मन्द मुसुकाय, दूर लखि भागे रे बेइमनवाँ॥

झूठी मिलन आस दै, रैन दिना दिल दागै रे बेइमनवाँ ॥
रसिक प्रेमघन रीझै जाय, सौति संग जागे रे बे० ॥ ६० ॥

तृतीय विभेद।

विशेष विकृत वा सर्वथा स्वतन्त्र लय।

रामा हरी।

सैयां बिना बिरथा भई जवानी रे हरी—की चाल।

सामान्य लय।

जुरी जमात गूजरी जमुना कूल कदम कुञ्जन मैं रामा।
हरि २ हिलि मिलि खेलैं कजरी राधा रानी रे हरी ॥
कोउ मृदंग, मुहँचंग, चंग, लै सारंगी सुर छेड़ैं रामा।
हरि २ कोउ सितार, करतार, तमूरा आनी रे हरी ॥
कोउ ओढ़ी टनकारैं, कोऊ घुंघरू पग झनकारैं रामा।
हरि २ नाचैं कितनी माती जोम जवानी रे हरी ॥
छायो सरस समाको सुर को, गावैं मोद मचावैं रामा।
हरि २ गावैं कजली की कल कोकिल बानी रे हरी ॥
हँसत लंक ललकावैं, नाक सकोरैं, ग्रीवँ हलावैं रामा।
हरि २ नैन बान मारैं भृग भौंहैं तानी रे हरी ॥
कहर भाव बतलावैं, सरपुर की सुन्दरिन लजावैं रामा।
हरि २ मोहि लियो मन स्याम सुँदर दिल जानी रे हरी ॥
निरखत लीला ललित सुखद सावन मैं ध्यान लगाये रामा।
हरि २ भरे प्रेमघन प्रेम जोरि जुग पानी रे हरी ॥ ६१ ॥

दूसरी ।

छनहीं छन छन-छबि की छबि है, छहरति आज छबीली रा० ।
हरि २ घिरी घटा घन की क्या, कारी कारी रे हरी ॥
हरी भरी क्या भई भूमि, तरु ललित लता लपटानी रामा ।
हरि २ चलन लगी पुरवाई प्यारी प्यारी रे हरी ॥
कूकैं मधुर मयूरी, नाचैं मुदित मोर मदमाते रामा ।
हरि २ चहुँ चिलायँ चातक चढ़ि डारी डारी रे हरी ॥
गुंजत मञ्जु मनोज मंत्र से, भँवर पुञ्ज कुञ्जन में रामा ।
हरि २ फबे फूल खिलि जंगल, झारी झारी रे हरी ॥
बरसत मनहुँ प्रेमघन रस जुवती मिलि झूला झूलैं रामा ।
हरि २ गावैं कजरी सावन, बारी बारी रे हरी ॥ ६२ ॥

गृहस्थिनों की लय ।

मीठी तान सुनाय प्रान करि बिकल गयो बनमाली रामा ।
हरि २ मोहि लियो मन मेरो मुरलीवाला रे हरी ॥
मोर मुकुट सिर, लकुट कलित कर, कटि पट पीत बिराजै रा० ।
हरि २ छबि छाजै उर लसित ललित बनमाला रे हरी ॥
रसिक प्रेमघन बरसत रस क्या सुभग साँवरी सूरत रामा ।
हरि २ मनहुँ मोहनी मूरति मदन रसाला रे हरी ॥६३॥

नवीन संशोधन ।

कैसी करूँ ! देत दरकाये अँगिया, उभरे आवैं रामा ।
हरि २ नाहीं मानै मदमाते जोबनवाँ रे हरी ॥

लगे सखी सावनवाँ अजहू आए नहीं सजनवाँ रामा।
हरि २ मोरवा बोलन लागे बनवाँ बनवाँ रे हरी ॥
पिया प्रेमघन के बिन कैसौं भावै नहीं भवनवाँ रामा।
हरि २ सूनी सेजिया लागै नहीं नयनवां रे हरी ॥६४॥

दूसरी।

बिलसत बदन अमन्द चन्द पर कालो घूँघरवाली रामा।
हरि २ लोटैं लट मानो पाली नागिनियाँ रे हरी ॥
सोहै नाक नथुनयाँ, लटकैं मोतिन को लटकनियाँ रामा।
हरि २ जियरा मारै कमर परी करधनियाँ रे हरी ॥
मन्द मन्द मुसुकनियाँ, बाँकी भौंहन की मटकनियाँ रामा।
हरि २ भूलै नाहीं मधुर बोल बोलनियाँ रे हरी ॥
गति गयन्द गामनियाँ, छम् छम् बाजै पग पैजनियाँ रामा।
हरि २ कुच नितम्ब के भार लंक लचकनियाँ रे हरी ॥
अजब उमंग जयनियाँ, डाले जादू जनु मोहनियाँ रामा।
हरि २ रसिक प्रेमघन सन हम पर तू जनियाँ रे हरी ॥६५॥

तीसरी।

(वारांगनारहस्य नाटक से संगृहीत।)

जादू भरी अजब जहरीली मानो हनत कटारी रामा।
हरि २ बाँके नैनन की चंचल चितवनियाँ रे हरी ॥
सुभग सौसनी सारी, सोहै तन पर कैसी प्यारी रामा।
हरि २ बादर मैं ज्यों दमकै दुति दामिनियाँ रे हरी ॥
कोकिल बैन सुनाय, मन्द मुसुकाती क्या बल खाती रामा।
हरि २ मदमाती जाती गयन्द गामिनियाँ रे हरी ॥

बरबस मन बस किये प्रेमघन बरसत रस इतराई रामा।
हरि २ इत आई वह कहौ कौन कामिनियां रे हरी ॥६६॥

रण्डियों की लय।

मनहुँ मदन मदहारी तोरी मनमोहनी मुरतिया रामा।
हरि २ भूलै ना सूरतिया प्यारी प्यारी रे हरी ॥
कसकैं नैन सैन हिय बेधे मानौ कोर कटारी रामा।
हरि २ मुस्कुरानि छबि छहरै न्यारी न्यारी रे हरी ॥
गोरे गालन अलकैं, छलकैं सरद चन्द पर जैसे रामा।
हरि २ लोट रहीं नागिनियाँ कारी कारी रे हरी ॥
जोहत जुग जोबन लट्टू से, होत हाय! मन लट्टू रामा।
हरि २ निखरी जोति जवनियाँ बारी बारी रे हरी ॥
बरस २ रस बेगि प्रेमघन! बिन तेरे कल नाहीं रामा।
हरि २ कौन मूठ पढ़ तूने मारी मारी रे हरी ॥६७॥

टूमरी।

नागरी भाषा।

नवीन सम्बोधन।

मुरली मधुर सुनायो हमसे भी तो आँख मिलायो रामा।
हरि २ गिरधारी, बनवारी, यार मुरारी! रे हरी ॥
अलकैं घूँघरवारी, लहरैं जैसे नागिन कारी रामा।
हरि २ लगैं चाँद सी सूरत पर क्या प्यारी रे हरी ॥
आवो पिया प्रेमघन वारी जाऊँ मैं बलिहारी रामा।
हरि २ बरसाओ रस मानो अरज हमारी रे हरी ॥६८॥

तीसरी।

आकर गले लगाले, मेरे निकलत प्रान बचा ले रामा।
हरि २ साँवलिया मैं तोपैं वारी वारी रे हरी॥
लगी लगन अपनी है तुमसे, अब क्यों हाय सतावो रामा।
हरि २ दिखला जा सूरतिया प्यारी प्यारी रे हरी॥
पिया प्रेमघन दिलबर जानी! तुझ पर मैं दीवानी रामा।
हरि २ कौन मोहनी तू ने डारी डारी रे हरी॥६९॥

नटिनों की लय।

मन्द २ मुसुकानि मनोहर बानि मोहनी डारे रामा।
हरि २ जियरा मारै कजरारी नजरिया रे हरी॥
क्या करौं दिया सारी, पहिने लागी लैस किनारी रामा।
हरि २ निखरि परी ओढ़े धानी चादरिया रे हरी॥
उभरे जोबन अंचल, पर कर देत चित्त हैं चञ्चल रामा।
हरि २ देखत धँसैं हिये ज्यों कोर कटरिया रे हरी॥
लाख आँख उलझाये, चलती ठहर २ बल खाये रामा।
हरि २ बाल कमानी सी लचकाय कमरिया रे हरी॥
पीर प्रेम की समझि, प्रेमघन हम पर दया दिखावो रामा।
हरि २ चार दिना है जोबन की बहरिया रे हरी॥७०॥

टूमरी।

निकरल ऊ तो आफत के परकाला रे हरी॥
औरन के संग जाला, रोजै बदलि रंग चौकाला रामा।

हरि २ देखत हमको दूरै से कतराला रे हरी ॥
जादू हम पर डाला, मारा कहर नजर का भाला रामा।
हरि २ गोरी सूरत मीठी मूरतवाला रे हरी ॥
पिया प्रेमघन तरसावै दै, टाला करै निराला रामा।
हरि २ पड़ा कठिन बस! बेदरदी संग पाला रे हरी ॥७१॥

तीसरी।

बनारसी लय।

हम पर जानी! तूने जादू डाला रे हरी ॥
सोहै सुन्दर बाला, कानन में क्या झूमकवाला रामा।
गरवां में छहराला मोती माला रे हरी ॥
कर चेहरा चौकाला, देकर मुरमे का दुम्बाला रामा।
कैसा मारा कहर नजर का भाला रे हरी ॥
क्या लहँगा लहराला, लाल दुपट्टा गजब सुहाला रामा।
देखत चोली हरी हाय जिउ जाला रे हरी ॥
सरस प्रेमघन आला, पायल नूपुर सोर सुनाला रामा।
चलत चाल जैसे मतंग मतवाला रे हरी ॥७२॥

गवनहारिनों* की लय।

घूमो मत इतरानी, भरी गरूरन भौंहन तानी रामा।
हरि २ जानो चार दिना की जिन्दगानी रे हरी ॥
जोबन रूप दिवानी, बोलो सब से अटपट बानी रामा।

---

* गवनहारिन यहाँ अधम श्रेणी की वेश्याओं को कहते हैं, जो प्रायः नफ़ीरी और दुक्कड़ अर्थात् रोशनचौकी पर विशेषतः बधावे आदि के साथ सड़क पर गाती चलती हैं और उनके गाने की लय सब से विलक्षण और अलग होती है।

हरि २ मानो मन में अपने को लासानी रे हरी ॥
है बादर परछाहीं, रहिहै यह कबहूँ थिर नाहीं रामा।
हरि २ बिते जवानी, कोऊ काम न आनी रे हरी ॥
हँस कर कबहुँ न ताको, हाय झरोखेहू नहिँ झाँको रा०।
हरि २ यार प्रेमघन से हठ बरबस ठानी रे हरी ॥७३॥

दूसरी।

सूरतिया ना भूले, हिय में हाय हमारे हूलै रामा।
हरि २ जानी तोरी चंचल चितवनियां रे हरी ॥
प्यारी प्यारी बतियाँ, सोहैं कुछ कुछ उभरी छतियाँ रामा।
हरि २ बारी बारी निखरी जोति जवनियाँ रे हरी ॥
सरस प्रेमघन बरसत रस, मृदु मन्द मन्द मुसुकाई रामा।
हरि २ मारि गई मोहिँ मनहुँ मूठ मोहनियां रे हरी ॥७५॥

तीसरी।

बनारसी लय।

सावन रस उपजाव बीतन चाहत ये बेदरदी रामा।
एक बेर दे देखै भरि नजरिया रे हरी ॥
झलको नहीं दिखाओ, दिल में दया दरद नहीं ल्याओ रामा
काहे मारो बरबस बिरह कटरिया रे हरी ॥
रसिक प्रेमघन बदरी नारायन मन लै मत भूलो रामा।
कतरावो जिन हमको देखि डगरिया रे हरी ॥७४॥

बिन्ध्याचली लय।

घुमड़ि घुमड़ि घन गरजन लागे रामा।

हरि २ सैयाँ बिना जियरा घबरावै रे हरी ॥
काली रे कोइलिया कुहूँ कुहूँ रट लाये रामा।
हरि २ बिरहा बधाई मोरवा गावै रे हरी ॥
पिया प्रेमघन अजहुँ न आये, आली सुधि बिसराये रामा।
हरि २ सूनी सेजिया साँपिन सी डँस जावै रे हरी ॥ ७६॥

गुण्डानी लय।

तथा गुण्डानी भाषा और भाव।

ठाला में क्या सावन बीतल जाला रे हरी ॥
तोहरे संगी साला, रोजे लहर करैलैं आला रामा
हरि २ हम तौ बैठा फेरत बाटी माला रे हरी ॥
तुहई पर जिव जाला, हमसे जिन करः टालबेटाला रामा।
हरि २ टहरावः जिन दै दै बुत्ता बाला रे हरी ॥
यार प्रेमघन प्याला मदिरा प्रेम पिये मतवाला रामा।
हरि २ तोहरे दर पर अब तौ डेरा डाला रे हरी ॥ ७७ ॥

गवैयों की लय।

ज्यों बर्षा ऋतु आई, सरस सुहाई, त्यों छबि छाई रामा।
हरि २ तेरे तन पर जानी, जोति जवानी, रे हरी ॥
जोबन उभरत आवैं, ज्यों नद उमड़त घुमड़त धावैं रामा।
हरि २ टूटत ज्यों करार, चोली दरकानी, रे हरी ॥
ज्यों कारे घन घेरे, त्यों कजरारे नैना तेरे, रामा।

हरि २ बरसत रत हिय रसिक भूमि हरियानी, रे हरी ॥
रसिक प्रेमघन प्रेमीजन, चातक बनाय ललचाए रामा।
हरि २ हँसत मनहुँ चंचल चपला चमकानी, रे हरी ॥७८॥

टूसरी ।

(निज मङ्गल बिन्दु से)

नन्दलाल गोपाल, कंस के काल, दीन हितकारी रामा।
हरि २ भज मेरे मन, मनमोहन बनवारी रे हरी ॥
राधावर सुन्दर नट नागर, मंगल करन मुरारी रामा।
हरि २ मधुसूदन माधव ब्रज कुञ्ज बिहारी रे हरी ॥
जग जीवन गोबिन्द गुनाकर, केशव अधम उधारी रामा।
हरि २ रसिक राज कर गिरि गोबर्धन धारी रे हरी ॥
काली मथन कृष्ण कालिन्दी के तट गोधन चारी रामा।
हरि २ सुखद प्रेमघन सदा हरन भय भारी रे हरी ॥७९॥

झूले की कजली ।

कालिन्दी के कूल कलित कुञ्जनि कदम्ब मैं आली रामा।
हरि २ झूलनि की झूलनि क्या प्यारी प्यारी रे हरी ॥
चमकि रही चंचला चपल, चहुँ ओर गगन छबि छाई रामा।
हरि २ सघन घटा घन घेरी कारी कारी रे हरी ॥
प्यारी झूलैं पिया झुलावैं गावैं सुख सरसावैं रामा।
हरि २ संग वारी सब सखियां बारी बारी रे हरी ॥
लचनि लंक की संक लली लहि बंक भौंह करि भाखैं रा० ।

हरि २ "बस कर झूलन सों मैं हारी हारी" रे हरी ॥
बरसत रस मिलि जुगल प्रेमघन हरसत हिय अनुरागैं रा० ।
हरि २ टरै न छबि अँखियनि तैं टारी टारी रे हरी ॥८०॥

जन्माष्टमी की बधाई ।

मिटरो सकल दुख द्वन्द, बढ़्यो आनन्द, नन्द घर जाए रामा ।
हरि २ अज आनन्द कन्द बृजचन्द मुरारी रे हरी ॥
भार उतारन काज भूमि, लखि भरी पाप तैं भारी रामा ।
हरि २ लीला ललित करन रुचि रुचिर बिचारी रे हरी ॥
अमर सकल अकुलाने, सुरगन बरसत सुमन सुखारी रामा ।
हरि २ कहत "जयति जय जय जग मंगलकारी" रे हरी ॥
गाय प्रेमघन गुन बिरञ्चि, शिव नाचत दै करतारी रामा ।
हरि २ मुदित मनहुँ तन मन की सुरत बिसारी रे हरी ॥८१॥

गोबर्धनधारण ।

(अनुराग बिन्दु से)

इन्द्र कोप करि आए, सँग में प्रलय मेघ लै धाए रामा ।
हरि २ राखो बृज बृजराज! आज भय भारी रे हरी ॥
घुमड़ि घोर घन कारे, घिरि २ ज्यों कज्जल गिर भारे रामा ।
हरि २ आय रहे जग छाय सघन अँधियारी रे हरी ॥
बज्रनाद करि धमकैं, चारहुँ ओर चंचला चमकैं रामा ।
हरि २ प्रबल पवन धरि झोकैं झंझा झारी रे हरी ॥

बरसैं मूसल धारा, जाको कहूँ वार नहिँ पारा रामा।
हरि २ जलही जल दरसात भरी छिति सारी रे हरी॥
गो, गोपी, गोपाल, भये बेहाल सबै मिलि टेरैं रामा।
हरि २ नन्द जसोमति मिलि हेरैं बनवारी रे हरी॥
अकुलानी राधा रानी, हिय लागि स्याम सों भाखैं रामा।
हरि २! "राखहु ब्रज बहुत अब हाय मुरारी!" रे हरी॥
दुखित देखि सबही करुनाकर, करुनाकर कर ऊपर रामा।
हरि २ गिरि गोवरधन धस्यो धाय गिरधारी रे हरी॥
चकित भये ब्रजबासी, अचरज देखि धन्य धनि भाखैं रामा।
हरि २ बरसैं सुमन सकल सुर अम्बर चारी रे हरी॥
बरसि थके नहिँ पस्यो बुन्द ब्रज, भाजे तब सिर नाई रामा।
हरि २ समझि प्रेमघन सुरनायक हिय हारी रे हरी॥८२॥

उर्दू भाषा।

नई तरहदारी है यह, या नई सितमगारी है (जानी)
(दिलबर!) लगी नई बतलाओ, किस से यारी ये जानी?
क्याही सूरत प्यारी, उबलैं आँखैं भरी खुमारी (जानी)
(दिलबर!) नई जवानी की छाई सर्शारी (ये जानी)
है जोड़ा ज़ंगारी पर, यह आज तेज़ रफ़्तारी जानी;
(दिलबर!) किधर चले हो करने को अय्यारी? (ये जानी)
अजब प्रेमघन 'अब्र' हमें इस दिल से है लाचारी जानी;
(दिलबर!) इसै जो है मंज़ूर तेरी गमख़्वारी (ये जानी)॥८३॥

तीसरा प्रकार।

सँावर गोरिया।

सामान्य लय।

"नाहीं तोरै जोबना पर बहार सँावर गोरिया"—की चाल।

ब्रज भाषा।

दोऊ मिलि करत बिहार सँावर गोरिया॥
आजु कलिन्दी कूलन कुसुमित कदम निकुञ्ज मझार सांव०
दोउ दुहूँ पर मन करत निछावर दोउ दुहुँ ओर निहार सां०
दोउ दुहुँ के गरबाहीं दीने रूसत करि तकरार सां० गो०
बरसत दोउ रस उमड़ि प्रेमघन मुख चूमत करि प्यार सां०

दूसरी।

कैसी करूँ कहाँ जाँव अब दैया रे॥
बरसाने के धोखे देखो आय गई नन्दगाँव अब दैया रे॥
जिय डरपत हिय थर २ कांपत लाग्यो याको दाँव अब दै०
मिलै न कहुँ मग बीच प्रेमघन मोहन जाको नाव अब दै०

गृहस्थिनों की लय।

स्थानिक ठेठ स्त्री भाषा।

तोहिँ पर सँवरा लुभान सँावरि गोरिया॥
सँवरी मूरत, रस भरी अँखियां, लखि बिन मोलवैं बिचान सां०
तोरे देखन काज आज कल, घूमै सँझवौ बिहान सां० गो०
एकहु पल नहिँ कल अब ओके जब से नैन उरझान सां०
मिलि रस बरसु प्रेमघन पिय पर दैकै जोबनवाँ कै दान सां०

ट्रसरी ।

जिनि करः जाए के बिचार बनिजरऊ!
रिमिझिमि २ देव बरीसे, बढ़ि आए नदिया औ नार बनि०
और महीना बनह बेपारी, सावन गटई के हार बनिज०
काउ नफा फेरि आइ भँजैब्यः, बढ़ि गए जोबना के बजार ब०
बरसः रस मिलि पिया प्रेमघन मानः कहनवाँ हमार ब०

तीसरी ।

भैया न आयल तोहार छोटी ननदी ॥
बरसत सावन तरसत बीता, कजरी के आइलि बहार छो०
सब सखी झूला झूलैं गावैं, सावन, कजरी, मलार छो०
पी २ रटत पपीहा, नांचत मोर किए किलकार छो० न०
पिया प्रेमघन बिन एको छन, नाहीं लागै जियरा हमार छो०

रण्डियों की लय ।

अजहूँ न आयल हमार परदेसिया!
बन २ मोरवा बोलन लागे, पापी पपिहरा पुकार पर०
घर घर झूला झूलत कामिनि, करि सोरहो सिंगार परदे०
सावन बीते कजरी आई, मिली न खबरिया तोहार परदे०
छाये कहां प्रेमघन तुम, करि झूठै कौल करार पर० ॥८९॥

दूसरी ।

बनारसी लय।

नाहीं भूलै सूरति तोहार मोरे बालम ॥
जैसे चन्द चकोर निहारै, तैसे हाल हमार मोरे बालम

और और जिय लागत नहिँ करि, थाकी जतन हजार मो०
पिया प्रेमघन तुमरे बिन मन करत रहत तकरार मो०॥९८॥

नटिनी की लय।

पिया २ कहां ? न सुनाव रे पपिहरा ॥
संजोगिनी सुखी सुमुखिन कहँ, भय बियोग न जनाव रे प०
ब्याकुल बिरही बनितन मन क्यों कहर पीर उपजाव रे प०
निठुर! प्रेमघन बनिकै तैं जिनि काम कटार चलावरे पपिहरा॥

दूसरी।

झुलनी जोबनवाँ तोहार सांवर गोरिया ॥
छतियन पर अस उभरे देखौ, जैसे कोर कटार सां० गो०
राह बाट घर बाहर सगतौं, चलत मचावैं तकरार सां०
लगत न हाथ पसारि प्रेमघन कीने जतन हजार सां० गो०

गवनहारिनी की लय।

ब्रज भाषा भूषित।

कुञ्ज मलीन भुलाय गईं गुइयाँ रे ॥
कौन बतैहै गैल आय अब;
यह जिय सोच समाय गईं गुइयाँ रे ॥
इतने मैं इक छैल छली को;
लखि छबि छकित लुभाय गईं गुइयाँ रे ॥
नेरे आय, धैन सर मारयो;

मैं जेहि घाय अघाय गई गुय्याँ रे ॥
ब्याकुल जानि, मोहिँ गर लायो ;
हौं सकुचाय लजाय गई गुय्याँ रे ॥
पिया प्रेमघन, मग बतरायो ;
मैं तेहि हाथ बिकाय गई गुय्याँ रे ॥ ९३ ॥

दूसरी ।

स्थानिक स्त्री भाषा ।

कजली खलमिरजापुरी की कचि का चित्र ।

सारी रँगाय दे: गुलेनार मोरे बालम ॥
चोली चादरि एक्कै रंगकै, पहिरब करिकै सिँगार मोरे बा०
मुख भरि पान नैन दै काजर, सिर सिन्दूर सुधार मोरे बा० ॥
मेंहदी कर पग रंग रचाइ कै, गर मोतियन कर हार मो०
गोरी २ बहियन हरी २ चुरियाँ, पहिरन जाबै बजार मोरे बा०॥
अँठिलातै चलबै पौजेबन की करिकै झनकार मोरे बाल० ।
और बहूटी सी बनि निकरब, बनठब लाखन यार मो० बा०॥
झेलुआ झूलब कजरी खेलब, गाउब कजरी मलार मो० बा०
सावन कजरी की बहार में, तोहसे करौबै तकरार मो० बा०॥
देखवैट्यन में खार बढ़ाउब जेहमें चलइ तरवार मो० बा०
आधी राति तोहरे संग सुतबै, मुख चूमब करि प्यार मो०बा०॥
बारे जोबन कै इहइ मजा है, जिनि किछु करल बिचार मो०
रसिक प्रेमघन पैयां लागौं, मानः कहनवां हमार मो० बा०॥

गवैयों की लय ।

आई री बरखा ऋतु आली ॥
घुमड़ि २ घन घटा घिरी चहुं दिसि चपला चमकावनवाली ।
छाय रहे कित जाय प्रेमघन नहिँ आये अजहूं बनमाली ॥९५॥

दूसरी ।

है आली! दिन चार जवानी ॥
दिना चार की चमक चाँदनी, फेरि अँधेरी रात अयानी ॥
बादर की परछाहीं है यह, तापैं काह इती इतरानी ।
बरसौ रस मिलि रसिक प्रेमघन बैठी हौ भौंहन जुग तानी ९६

तीसरी ।

हाय! गयो जादू जनु डाली ॥
चुभी चितौन कौन बिधि निकरै, कसकत रहत अरी उरआली
बिसरै नाहिँ प्रेमघन पिय की प्यारी छबि मनमोहनवाली ९७

झूले की कजली ।

बृजभाषा भूषित।

झूलन की उझकनि झुकि झूलनि ॥
कलित निकुंज कदम्ब कलापी
कुल कूकनि कालिन्दी कूलनि ॥
ललित लतन लपटनि तरु उपवन
फबे फैलि फूले फल फूलनि ॥
गावनि गरबीली गजगामिनि
गन गोपाल हरखि हँसि हूलनि ॥

लहँगन की लहरानि पितम्बर,
की फहरानि हरनि हिय मूलनि ॥
झुमकन की झूलनि जैसो,
त्यों झुलनी की झूलनि सुख मूलनि ॥
उरझनि बन माली बन माला,
बाल माल मोती सँग चूलनि ॥
प्रेम प्रलाप करत दोउ मोहे,
कहि २ निज बतियन की भूलनि ॥
बरसत रस मिलि जुगल प्रेमघन,
लगि हिय लहि आनन्द अतूलनि ॥ ९८ ॥

तिनतुकी ।

(खँजरीवालों की लय।)

नन्द के कुमार, दियो तन मन वार,
लखि आई तोरे जोबन पर बहार रे गुजरिया ॥
जनु करतार, निज हाथनि सँवार,
दियो तोहि रचि जगत सिँगार रे गुजरिया ॥
नैना रतनार, मयन मद मतवार,
हेरि सैनन की हनत कटार रे गुजरिया ॥
दरके अनार, लखि मुस्कान डार,
देत मानो मोहनी सी पढ़ि मार रे गुजरिया ॥
प्रेमघन यार, गयो तोपैं बलिहार,
ताकु ताहि तनी घूँघट उघार रे गुजरिया ॥ ९९ ॥

उर्दू भाषा ।

दिल फ़रेब दिन हैं सावन के ॥
घिरकर काली घटा दिखाती है जोबन को चर्ख़ कुहन के ।
सब्ज़ा छाया ज़मीं प' हँसते हैं खिलकर गुलहाय चमन के॥
घूम रही हैं बीरबहूटी गोया बिखरे लाल दमन के ।
चमक रही है बर्क़ सीखकर तर्ज़ नाज़नीनेपुरफ़न के ॥
नाच रहे हैं मोर पपीहे शोर मचाते हैं गुलशन के ।
गा कर झूला झूल रहे हैं माह लक़ा सब सीम बदन के ॥
दियो भये गुलरंग भूलकर सब ख़याल बातिल बचपन के ।
अब्र बरसता है यारों दो बोसे दो लिल्लाह दहन के ॥ १०० ॥

द्वितीय भेद ।

बुँदेलवा ।

'बँसिया बजावै गोपाल कान्ह रे बुँदेलवा' की लय ।

निलज बलम बेइमान रे बुँदेलवा ॥ टे ॥
हमसे प्रीत रीत नहिं राखै, औरन संग उरझान रे बुँदेलवा ॥
रतियां जागि भागि उठि भोरहिं, आवइ घर खिसियान रे बुं० ॥
पिया प्रेमघन की चालन सों, मैं तो भई हैरान रे बुंदे० १०१ ॥

दूसरो ।

उमड़ि जोबनबन पर परि बुँदवा होइ जायँ चखना चूर रे बु०॥
तन दुति देखि लजाय दमिनियाँ दौरै दूरै दूर रे बुँदेलवा ॥
पिया प्रेमघन अलकन लखि घन कँहरत छोड़ि गरूर रे बु०१०

तृतीय भेद ।

नवीन संशोधन ।

भद्दा ।

पाये भल बाये रँग लाल रे करँवदा ।
नाहीं ओस लेस दूओ गाल रे करँवदा ॥
ओठ लखि बिकल प्रबाल रे करँवदा ।
कुनरू गिरल खसि हाल रे करँवदा ॥
देखि २ नैनन कै हाल रे करँवदा ।
कँवल मुकुल बिच ताल रे करँवदा ॥
लखि अँटखेलिन की चाल रे करँवदा ।
लजि २ भजलैं मराल रे करंवदा ॥
निरखत भुजन बिसाल रे करंवदा ।
कीच बीच घुसल मुनाल रे करंवदा ॥
देखि २ ठोढ़िया कै ढ़ाल रे करंवदा ।
पकि चुइ परल रसाल रे करंवदा ॥
लखि कुच कठिन कमाल रे करंवदा ।
दाड़िमहुं भयल हलाल रे करंवदा ॥
ससि पर आयल जवाल रे करंवदा ।
लखि मल चमकत माल रे करंवदा ॥
प्रेमघन घन अलि माल रे करंवदा ।
लाजे लखि घुँघराले बाल रे करंवदा ॥ १३ ॥

चतुर्थ भेद।

दुनमुनियाँ की कजली

लोय।

"ठियन कै ठैयां मुयाँ घरम तोहार लोय"—की लय।

धावन लागे बादरवा मचावन लागे सोर मोर॥
मिले मोरिनी संग कलोलैं नाचैं चारो ओर मोर।
आकुल लागी दी काम की जोअब कीनो जोर मोर॥
लागै नाहीं जिया सखी री बिना मिले चितचोर मोर।
बालम बसे बिदेस प्रेमघन भूले प्रेम अथोर मोर॥ १७४॥

नागरी भाषा।

दसो दिशा में दमक रही दामिनि है देखा बार बार।
प्रभा प्रकृति प्रगटाती है अम्बर का अम्बर फार फार॥
घिरकर काली घटा बरसती बूँद सुधा सी गार गार।
उमड़ २ कर बहता है जल झील नदी औ नार नार॥
बर्षा ऋतु आई सुखदाई तपन ताप कर पार पार।
हरी भरी छिति भई, झुके तरु हरियारी के भार भार॥
बहती बेग भरी पुरवाई खिले सुमन सब झार झार।
नाच रहे हैं मोर पपीहे, पिहँक रहे हैं हार हार॥
संयोगिनी नारि नीरज नैनों मे अञ्जन सार सार।
मेहँदी के रंग रंगकर कर पद, पट करौंदिया धार धार॥
विशद विभूषण से भूषित झूलती हैं झूले द्वार द्वार।
गाती हैं कजली मलार, मिल २ कर दो दो चार चार॥

सरस भाव भीनी चितवन से देखैं घूँघट टार टार ।
मन्द २ मुसुकातीं मानो मूठ मोहनी मार मार ॥
पिय से मिलीं मदन मदमाती देतीं सी हिय हार हार ।
वियोगिनी बनितायें बिलख रही हैं आँसू ढार ढार ॥
सुनकर जाने की बातैं जी जलता है हो छार छार ।
जावो कहीं न पिया प्रेमघन जाऊँ तुम पर वार वार ॥१०५॥

उर्दू भाषा ।

बने ठने यों कहां से आते हो मेरे दिलदार यार ॥
रुखे मुनव्वर पर बिखरे हैं गेसूये ख़मदार यार ।
गञ्जि हुस्न पर यांकि निगहबां हैं यह काले मार यार ॥
चश्मि मस्त में बादे गुलगूँ का है भरा ख़ुमार यार ।
तेगे निगहे नाज़ से करते फिरते हैं यह वार यार ॥
दस्तो पाय हिनाई पोशिश रंगे गुले आनार यार ।
लब लाला भी रंगे पान से दिखलाते हैं बहार यार ॥
अब मत मेरा दिल तरसाओ सुनो मेरे अय्यार यार ।
अब्रि करम बरसो मुझ पर दे दो बोसे दो चार यार ॥१०६॥

पञ्चम विभेद ।

दूनमुनियां म मानि की कजली ।

मोरे हरी के लाल ।

'तिसिया के तेलवा में मुड़वा दबायों मोरे हरी के लाल' - की लय ।

जमुना के तीर भोर भई आज भारी—जसुदा के लाल ।
भूलैं भूला मिलि गोपी ग्वाल—जसुदा के लाल ॥

गावैं सब सखी मिलि कजरी रसीली—जसुदा के लाल।
बांसुरी बजावैं दै २ ताल—जसुदा के लाल॥
हुरन हेराय प्यारी आय गर लागै—जसुदा के लाल।
होयँ तब निपट निहाल—जसुदा के लाल॥
लपटाय मोतिन के हार हरसने—जसुदा के लाल।
मटि मुरझावैं बनमाल—जसुदा के लाल॥
कौनौ सखिया कै उड़ी ओढ़नी ओढ़ावैं—जसुदा के लाल।
चञ्चलहु अञ्चल सँभाल—जसुदा के लाल॥
झूलत केहूकै नथ बेसर बंधावैं—जसुदा के लाल।
केहूकै सुधारैं बेंदी भाल—जसुदा के लाल॥
छतियां लगाय डर केहूकै छोड़ावैं—जसुदा के लाल।
केहू के खिझावैं चूमि गाल—जसुदा के लाल॥
मीठी २ बात कै मनावैं फुसिलावैं—जसुदा के लाल।
कौनो के गरे में भुज डाल—जसुदा के लाल॥
इहि भांति प्रेमघन रस बरसावैं—जसुदा के लाल।
रवि कुल कुन्दन के जाल—जसुदा के लाल॥ १०७॥

षष्ट विभेद।

नवीन संशोधन।

यथा।

सुनः! २ मदन गोपाल जसुदा के लाल।
सीखयः ई तूं कवन कुचाल जसुदा के लाल॥
लखि बन सघन बिसाल जसुदा के लाल।
लुकः चढ़ि कदम की डाल जसुदा के लाल॥

देखतहिँ प्यारी ब्रजबाल जसुदा के लाल ।
धावः होइ अतिही उताल जसुदा के लाल ॥
धरिकै घुँघट खोल खाल जसुदा के लाल ।
लाज तजि करः देख भाल जसुदा के लाल ॥
बहियां गरे के बीच घाल जसुदा के लाल ।
चूमः हाय अधर रसाल जसुदा के लाल ॥
केधुवौ के करः न खियाल जसुदा के लाल ।
झकझोरि तोरः मोती माल जसुदा के लाल ॥
आय घरे कही जो है हाल जसुदा के लाल ।
परि जाय बृज मैं जवाल जसुदा के लाल ॥
प्रेमघन परि प्रेम जाल जसुदा के लाल ।
राखः चित रचिक संभाल जसुदा के लाल ॥ १०८ ॥

चौथा प्रकार।

सांवलिया।

सामान्य लय।

"कवनै घाटे भरल्यू गगरिया रे, सांवलिया।" की लय।

धनि बिन्ध्याचल रानी रे साँवलिया ॥
जलधर नवल नील सोभा तन चित चातक ललचानी रे ॥
भादवँ बदी दुतीया गोकुल नन्दभवन प्रगटानी रे सां० ।
तू जग जननि जोगमाया जसुदा दुहिता कहलानी रे सां०॥
बदलि कृष्ण बसुदेव तोहि लै आए बृज रजधानी रे सां०।

कृष्ण अष्टमी की निशि गोकुल सों मथुरा मैं आनी रे मां॥
देखि देवकी गोद विराजत चिघरि २ चिल्लानी रे मां० ।
रोदन मिसि जनु कंसहि टेरति देवकि अभिद् जुड़ानी रे॥
सुनि सठ दौरि धाय तहँ पहुँच्यो हरषत हिय अभिमानी रे।
पटकन चह्यो उठाय तोहि धरि बल करि अतिसय तानी॥
चमकि चली चपला सी छुटि सब तू मरोरि खलपानी रे।
पहुँचि गगन पर बिहँसत बोली कंस विध्वंसन बानी रे॥
आय बसी विन्ध्याचल 'देवी कान्ति' अमल छवि छानी।
कृष्ण बहिन कृष्णा, काली, स्यामा, सुख सम्पति दानी रे॥
विजया, जया, जयश्री, दुर्गा, अष्टभुजा जग जानी रे।
आदि सक्ति अवतार नाम इन कहि पुज्यो तुहिँ ज्ञानी॥
भक्तन के भय हरत देत फल चारौ सहज सयानी रे।
बरसहु कृपा प्रेमघन पैं नित निज जन जानि भवानी रे॥

दूसरी।

काजर सी कजरारी देवि कजरिया॥
कारे भादवँ की निसि जाई करि ब्रज लोग सुखारी देवि।
कारे कान्हर की भगिनी तू जो सब जग हितकारी देवि।
कंस नकारे कारि हिय मैं उपजावनि भय भारी देवि क०।
कारे विन्ध्याचल की वासिनि दायिनि जन फल चारी दे०।
काली ह्वै कारे महिषासुर अघमहिँ सहज सँहारी देवि क०।
कारे असुर अनेकन मारे सुम्भ निसुम्भ पछारो देवि कज०।
पाहि प्रेमघन आनि भक्त निज कारी अलकन वारी दे०। ११०

—:०:—

गृहस्थिनों की लय।

स्थानिक स्त्री भाषा।

काहे मोसे लगन लगाए रे सांवलिया ॥ टे ॥
लगन लगाय हाय बेदरदी, कुबजा के घर छाए रे सांवलिया ॥
अस बे पीर अहीर जाति तैं, कौल करार भुलाए रे सांवलिया ॥
सावन बीता कजरी आई, तैं न सुरतिया देखाए रे सांवलिया ॥
झूँठे प्रेम देखाय प्रेमघन, भल हमके बरसाए रे सां० ॥१११॥

रंगिडयों की लय।

लगत सुरत तोरी नीकी रे सांवलिया ॥ टे ॥
संवरी सूरत रस भरी अँखियाँ,
चितवन कोरनि जी की रे सांवलिया ॥
बरसि प्रेमघन रसहि सुनाओ,
तनक तान मुरली की रे सांवलिया ॥ ११२ ॥

नटिनों की लय।

तोरे पर गोरिया लुभानी रे सांवलिया ॥टे०॥
गोल कपोलन पै लखि लांबी,
लट लोटत छितरानी रे सांवलिया ॥
मोर मुकुट सिर चपलित लोचन,
की चितवन अलसानी रे सांवलिया ॥
मिलि रस बरसु प्रेमघन तोपैं,
बिन हीं मोल बिकानी रे सांवलिया ॥११३॥

उर्दू भाषा ।

बारिश के दिन आए, प्यारे प्यारे ।
उमड़ चलीं नदियाँ औ नाले, झील सबी उतराये प्यारे २।
हुई ज़मीं सर-सब्ज़ खूब रँग रँग के फूल खिलाये प्यारे २॥
खुश-इलहानी से हैं पपीहे, कैसा शोर मचाये प्यारे २।
मस्त हुए ताऊस नाचते हैं, पर को फैलाये प्यारे २॥
रँगि-हिना दस्तो पा में हैं, गुलरूओं ने लगाये प्यारे २।
झूल रहे हैं झूले, बाले जुल्फों से उलझाये प्यारे २॥
हरी भरी बेलों को हैं अशजार सबी लिपटाये प्यारे २।
बाराने रहमत हैं बरसाते "अब्र" चारसू छाये प्यारे २ ॥११४॥

नवीन संशोधन ।

मोहे मन बँसिया बजाय के रे सांवलिया ॥
बँसिया बजाय कै, सरस सुर गाय कै,
मीठी २ तान सुनाय कै; रे सांवलिया ।
नैनवां नचाय कै, भउहँ मटकाय कै,
मधुर २ मुसकाय कै; रे सांवलिया ॥
नेहियाँ बढ़ाय कै, ललचि ललचाय कै,
तन मन मदन जगाय कै; रे सांवलिया ।
बेगि प्रेमघन रस बरसाय कै,
मिलु पिय हिय हरखाय कै; रे सांवलिया ॥ ११५ ॥

दूसरी।

जावे कहँ लगन लगाय कै; रे सांवलिया॥
कुञ्जन में आय कै, बँसुरिया बजाय कै,
सखियन सबन बुलाय कै; रे सांवलिया।
भावन दिखाय कै, रसीली गीत गाय कै,
चितवत चितहि चुराय कै; रे सांवलिया॥
रासहि रचाय कै, अंग परसाय कै,
सब सुधि बुधि बिसराय कै: रे सांवलिया।
पिया प्रेमघन गरवाँ लगाय कै,
सब रस लिहे मन भाय कै; रे सांवलिया॥ ११६॥

द्वितीय विभेद।

डेवढ़।

'कहथी पँडाइन पाँडे सुन मोरी बतियाँ, जोन्हरी बोवाय जिव के काल बाति खेते म सियार बोले खेते म सियार बोलै ना" की चाल।

सुनि सुनि रैट्यां तोरी बतियां,
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!
सावन मास चलन कित चाहत, करि छल बल की बतियां;
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!!
नहिं बीतत बालम बिन बरखा, की अँधियारी रतियां;
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!!
पिया प्रेमघन घन घिरि आये, मूनो लगकर छतियां;

जियरा हमार हरै ! जियरा हमार हरै ना !! ॥ ११७ ॥

दूसरी ।

बोलन लगे हैं बन मोरवा,
सोरवा मचाय हाय ! सोरवा मचाय हाय ! ना ॥ टे० ॥
सूनी सेज अँधेरी रतियाँ, जगत होत नित भोरवा ;
मोहिँ न सुहाय हाय ! मोहिँ न सुहाय हाय ना !!
पिया प्रेमघन तुम कहाँ छाये, भूलि सूरति चित चोरवा ;
मिलु अब आय हाय ! मिलु अब आय हाय ना !! ॥११८॥

झूले की ।

धीरे धीरे झुलाओ बिहारी,
जियरा हमार हरै ! जियरा हमार हरै ना !! ॥ टे० ॥
छतियां मोरी धर धर धरकत, दे मत झोंका भारी ;
जियरा हमार हरै ! जियरा हमार हरै ना !!
लचत लंक नहिँ संक तुमै कछु, हौ बस निपट अनारी ;
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै !!
दया वारि बरसाय प्रेमघन, रोक हिँडोर मुरारी ;
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै ना !! ॥ ११९ ॥

नवीन संशोधन ।

स्थानिक ठेठ ग्राम्य की भाषा ।

मानः कि न मानः हम तौ जाबै नैहरवाँ,

कजरी क दिन नगिचान बा;
जिया ललचान बा न।
छोड़ि ससुरारि आइलि बाटीं सब सखियाँ,
छोटका बहनोयौ मेहमान बा;
मिलल मिलान बा न।
भेजली संदेसा मोरी बड़ी भउजैया,
आवः भल सावन सुहान बा;
जुटल समान बा न।
झूला मिल झूली गाई कजरी रसीली,
खेल ढुनमुनियाँ मिठान बा;
मन हुलसान बा न।
खुसी में बितावः सावन जबलैं जवानी,
प्रेमघन प्रेम उमड़ान बा;
लहर लखान बा न। ॥१२०॥

दूसरो।

ब्रज भाषा।

चातक रटान की, मयूरनि नटान की,
छाई छबि घिरन घटान की;
लहर अटान की न।
पान मदिरान की, रसीले पान खान की,
छेड़नि मलारन के तान की;
कजरी के गान की न।

सजी सेजियान की, सुतनि सतरान की,
पिय हिय लगि मुसकान की;
चुम्बन के दान की न।
कुटि छितरान की, अलक उलझान की,
झूलनि में लर मुकतान की,
सूहे दुपटान की न।
है न ऋतु मान की, अरी पिय मिलान की,
प्रेमघन प्रेम उमड़ान की,
सुख के निधान की न। १२१॥

तीसरी।

आरे अब निठुर दुहाई तोहि राम की,
कैसी बरखा है धूमधाम की,
प्रेमिन के काम की न।
तरसत बरसन सों मैं बैठी,
पिया बनि चेरी तेरे नाम की;
बिकी बिना दाम की न।
बरसु बेगि रस प्रेम प्रेमघन,
बिछी सेज सजे सूने धाम की;
निसि जुग जाम की न। १२२॥

छूट।

प्रधान प्रकार के चतुर्थ विभेद में।

नवीन संशोधन।

कबहूँ तौ इत आवो, तनी बाँसुरी बजाओ,
मन मेरो बहलाओ; भूलै नाहीं तोरी साँवरी मुरलिया ना।
नैना तोरे रतनारे, अनियारे कजरारे,
मयन मद मतवारे; करैं जुवतिन के हिय घतिया ना।
खुली गालन पैं प्यारी, लट लहरैं तिहारी,
कारो कारी घूँघरवारी, डसैं मन मानो नागिनि कीभँतिया ना।
मुख लखि चन्द लाजै, सीस मुकुट बिराजै,
अंग २ छवि छाजै; प्यारी २ प्रेमघन तोरी बतिया ना। १२३॥

अन्य।

तीसरे प्रकार का सप्तम विभेद।

"भैया सवादेस पतङ्गिया भी डोर रे" की चाल।

जोबनवां तोरे बड़े बरजोर रे॥
का करिहैं जानी बड़े पर न जानी,
अबहीं तौ हैं ये उठे थोरै थोर रे।
छाती फारैं देखे, छाती पर तोरे,
नोकीले जैसे कटरिया कै कोर रे।
प्रेम के पीर बढ़ावैं झलकतै,
हैं घनप्रेम छिपे चित्त चोर रे। १२४॥

ढुनमुनियाँ की कजलियाँ।

प्रथम लय।

"हरि हो राजा दुअरवा चम्पा बेलि मडुआ झकझूमरिया की चाल।

हरि हो—मानो कहनवा हमार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—गावत राग मलार, बजाओ फिर बाँसुरिया॥
हरि हो—वर्षा के आइलि बहार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—छाये मेघ दिसि चार, बजाओ फिर बाँसुरिया॥
हरि हो—जमुना बही जल धार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—लखि न परत जाको पार, बजाओ फिर बाँसुरिया॥
हरि हो—मोर करत किलकार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—दादुर रट दिसि चार, बजाओ फिर बाँसुरिया॥
हरि हो—झूलो हिँडोरा संग यार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—करिके प्रेमघन प्यार, बजाओ फिर बाँसुरिया॥

दूसरी।

मोहिँ टेरत है बलबीर बजी बन बाँसुरिया।
सुनि बढ़त मनोज की पीर बजी बन बाँसुरिया॥
चलु बेगि जमुनवाँ के तीर बजी बन बाँसुरिया।
सखियन की भई जहाँ भीर बजी बन बाँसुरिया॥
जहाँ सीतल बहत समीर बजी बन बाँसुरिया।
किलकारत कोकिल कीर बजी बन बाँसुरिया॥
घन प्रेम की प्रेम जँजीर बजी बन बाँसुरिया।

मोहि खींचत करत अधीर बजी बन बाँसुरिया ॥ १२६ ॥

दूसरी लय।

स्थानिक स्त्री भाषा।

'मैं तो ठाढ़ी जमुना जल तीर झुलनियाँ में गरद परी' की चाल।

आय कजरी कै दिन नगिचान रँगावः पिया लाल चुनरी॥
रेसमी सबुज रंग अँगिया सिअवः,
बेगि बैठि दरजिया की दुकान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
लालै रंग अपनी पगरिया रँगावः,
होइ रँगवौ से रँग कै मिलान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
बगिया में झुलुआ डरावः झूलः सँग,
सुनः नई २ कजरी कै तान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
प्रेमघन पिया तरसावः जिनि जिया,
आयल बाटै सजि सावन समान—रँगावः पिया लाल चुन०

तीसरी लय।

"पैयाँ लागौं मैं तोरि टेवरवा, लेउँ बलैया रे, भैया नैहरे कै रहिया बताव" की चाल।

काली बदरिया उमड़ि घुमड़ि कै उमड़ि घुमड़ि कै हो,
दैया ! बरसन लागी चारिउ ओर।
दसौ दिसा मै दमकि २ कै, दमकि २ कै हो,
दामिनि जियरा डेरावै लागी मोर।

पपिहा पापी पिया २ की, पिया २ की हो,
दादुर सँग रट लाये बरजोर !
पिया प्रेमघन अजहुँ न आये, अजहुँ न आये हो,
छाये कहाँ करि जियरा कठोर। १२८ ॥

चौथो लय।

'कजरी खेलत बीती आधी की रतियाँ, मैं कैकरें गोहनवाँ जाउँ रे दुइरंगी' की चाल।

दे नहँकारि, कि चलु मिलु पिय से,
हमैं न सुहाय, तोरी बात, रे दुइ रंगी ॥
नाक सिकोरिकै, भौंहैं मरोरति,
ओठवन से मुसुकात, रे दुइ रंगी ॥
आये पिया कर करत निरादर,
रूठि गये पछितात, रे दुइ रंगी ॥
बरसि २ निकरत, पुनि बरसत,
आई भली बरसात, रे दुइ रंगी ॥
निसि अँधियरिया मैं चमकै बिजुलिया,
भइलि सोहावनि रात, रे दुइ रंगी ॥
लाज सँजोग के सोच बिचार मैं,
बितलि जवानी जात, रे दुइ रंगी ॥
प्रेम प्रेमघन सों कर नाहक,
गुरुजन हर सकुचात, रे दुइ रंगी ॥ १२९ ॥

पँाचवीं लय ।

'मेँदरा बोय धन ऐसे तैसे कजरा कैसे धोय:' की चाल ।

सावन में मन भावन सों चलिकै मिलु आली ।
बंसी बजाय बुलावत है तोहि को बनमाली ॥
घेरत आवत अम्बर देखि घटा घन काली ।
काहे बिलम्ब लगावत है उठ री अब हाली ॥
फेंकु छड़ा छला चम्पकली बिजुली अरु बाली ।
तोहि अभूषन रूप रचो विधि नारि निराली ॥
काहे सिंगार सिंगारत री करि ओस बहाली ।
कैसहिँ तू घन प्रेम पिया मन मोहन वाली ॥ १३० ॥

छठवीं लय ।

'कारे भँवरा रे तैं तो जुल्म किहे'' की चाल

कारे बदरा रे जल बरसि रहे ।
छन गरजि सुनावैं, दुति दामिनि दिखावैं,
घिरि घिरि आवैं; जनु छिति परसि रहे ॥
मोर नाचैं किलकारि, घेरी घटनि निहारि,
पिक पपिहा पुकारि; हिय हरसि रहे ।
गावैं कजरी मलार, झूलैं सजिकै सिंगार,
तिय, मोहे रिझवार, छबि दरसि रहे ।
तजु मान इहि छन, मिलु सजनी सजन ;
बिन तेरे प्रेमघन पिय तरसि रहे । १३१ ॥

-----.0.-----

कजली की कजली।

दूसरे प्रकार का तृतीय विभेद।

साँचहुँ सरस सुहावन, सावन, गिरिवर विन्ध्याचल पैं रा०
हु० २ मिरजापुर की कजरी लागै प्यारी रे हु० ॥
दूर मङ्गल त्रिकोन का मेला, होला अजब सजीला रा० ;
हु० २ जङ्गल में है मङ्गल की तैयारी रे हु० ॥
काली खोह छानि कै बूटी, गवड़े तान उड़ावैं रा० ;
हु० २ अष्टभुजा पर भैलीं भिरिया भारी रे हु० ॥

कहूँ जुवक जन सजे इतै उत डोलैं, बोली बोलैं रा० ;
हु० २ कहुं हिँडोला झूलैं बारी नारी रे हु० ॥
ओढ़ि ओढ़नी धानी, कितनी गुलेनार चादरिया रा० ;
हु० २ पहिने सारी जंगारी जरतारी रे हु० ॥
चातक, मोर सोर जहँ होते, तहं खनकार चुरी के रा० ;
हु० २ छन्द छड़ा पाजेबन की झनकारी रे हु० ॥
कानन सघन सृङ्ग गिरि कन्दर, बिहरैं जहँ मृग माला रा० ;
हु० २ तहँ मनहरनी हरनी लोचन वारी रे हु० ॥

मंजुल मधुर मलार, सरस सुर सावन, कल कजली के रा० ;
हु० २ गुञ्जत कुञ्ज मनहुं कोकिल किलकारी रे हु० ॥
निरतत नटिन परीन सरिस, संग ढोलक बजत चिकारा रा० ;
हु० २ लट खोले, पहिने टोपी औ सारी रे हु० ॥
उलटा शहर बनारस, मिरजापुर के रसिक रसीले रा० ;
हु० २ होन लगी आपुस में खारा खारी रे हु० ॥

बिते पहाड़ी मेला सावन के, जब कजली आई रा०;
हु० २ मिरजापुर में तब छाई छबि न्यारी रे हु० ॥
घर घर झूला झूलैं, करैं कलोलैं गलियां गलियां रा०;
हु० २ ढुनमुनियां खेलैं जुवती औ बारी रे हु० ॥
मेहँदी ललित लगाय करन में, साजे सूही सारी रा० ;
हु० २ कुलवारी तिय गावैं चढ़ी अटारी रे हु० ॥

बार नारि नाचैं औ गावैं, सरस भाव बतलावैं रा० ;
हु० २ बरसावैं रस मनहुं सुमुखि सुकुमारी रे हु० ॥
पूरित सहर सरंगी के सुर, सहित ताल तबलन के रा० ;
हु० २ टनकारी जोड़ी, घुंघुरू झनकारी रे हु० ॥
मोहे जुवक रसीले, निरखत इत उत व्याकुल घूमैं रा० ;
हु० २ कजरी के मिसि छाई प्रेम खुमारी रे हु० ॥
छटे जवान बीहड़ औ अक्खड़, टाढ़े नजर लड़ावैं रा० ;
हु० २ चलैं यार लोगन में छुरी कटारी रे हु० ॥
पैंदा कटैं जहां तोड़न* के, परी छूट† की लूटैं रा० ;
हु० २ लेलीं रुपिया रण्डी जेबा झारी रे हु० ॥
"चलः ! बहः ! धोबी है ! धोबी"‡ ! बोली सुनि २ भागैं रा०
हु० २ दीन तमाशा बीनन की है ख्वारी रे हु० ॥

---

* रुपये से भरी टाट की थैली।

† दो प्रेमी वा तमाशबीनों का नाचती हुई रण्डी को अधिक २ रुपया देने से एक दूसरे को परास्त करना।

‡ उज्वल वस्त्र पहिनकर बिना रुपया दिये नाच देखनेवालों पर सफ़ेदों और तमाशियों की बोली, ठोली,।

मिरमोहानी, नारघाट औ सड़क पमर इट्टा* पर रा० ;
ह० २ चलैं टुनको नैनन की तरवारी रे ह० ॥
बनै रस जहँ प्रेम प्रेमघन सुख सरिता भरि उमड़ै रा० ;
ह० २ रहै नगर में नित्य नई गुलजारी रे ह० ॥ १३२ ॥

ठुमरी ।

मिरजापुरी गुण्डों का यथार्थ चित्र

बनी शकल गुन्डानी, बोलैं गजबै बीहड़ बानी रामा ।
ह० चालैं मिरजापुरियों की मरदानी रे हरी ॥
टेढ़ी पगड़ी पर सतरंगा साफ़ा भी बेढंगा रामा ।
ह० छरा दुपट्टा गुलेनार या धानी रे हरी ॥
कुरता भी चौकाला, छाला झूलै लिलपर माला रामा ।
ह० गन्डा गले भले बाँधे सेल्हानी रे हरी ॥
कसी किनार दार धोती, घुठने के ऊपर होती रामा ।
ह० चलैं झूमते ज्यों हथिनी बौरानी रे हरी ॥
काला कमर बन्द का फाँड़ा ऊँचा, हथवाँ खाँड़ा रामा ।
ह० कमर कटारी छुरी जहर बुझानी रे हरी ॥
काँधे मोटी लाठी, पैसा कौड़ी एक न गाँठी रामा ।
ह० तौभी झरैं पी २ करके पानी र हरी ॥
काला टीका बेंड़ा पर, महावीरी ऊँचा टेढ़ा रामा ।
ह० मुहँ में चाभत पान, बैन ज्यों मानी रे हरी ॥
खेलन हुदड़ पेलाये, कुछ को कुश्ती खूब लड़ाये रामा ।

* नकटी के नाम जहाँ राम का मेला लगता है । शोक ! कि अब यह राम का मेला नाम मात्र को रह गया ।

ह० मूखे चने चाभके बूटी छानी रे ह० ॥
संझा छोड़ अखाड़े, करके यक्का भी येक् भाड़े रामा।
ह० घूमि हटे "सत्ती" या "तिरमोहानी*" रे ह० ॥
कमर तनिक लचकाये, कुछ २ गर्दन भी उचकाये रामा।
ह० आड़े घुड़रते संगिन संग दिलजानी रे ह० ॥ ॥

अकड़ बकड़ बतलाते छिन २ मेळा ऐंठत जाते रामा।
ह० भौंह तान आंखैं कर ऐंची तानी रे ह० ॥
तार देखकर रस्ते जाते, बोली ठोली करते रामा।
ह० बदले में चाहै दस गाली खानी रे ह० ॥

नाहक भी लड़ जाते, चाहे उलटे पोटे जाते रामा।
ह० परे पुलिस में भोग करैं हलकानी रे ह० ॥
कानिसटिबिलन मारैं, कोतवाली के धरि गढ़ि डारैं रामा।
ह० जेल जाय कोल्हू चढ़ि पेरैं घानी रे ह० ॥

जब छुटि के फिर आवैं, "गुरू मियादी" के पद पावैं रा०।
ह० तब आवै पूरी उन पर मरदानी रे हरी ॥
महाजनन डेरावैं, त्रिसनिन से भी माल पुजावैं रामा।
ह० जुवा खेलावैं खुले जान पर ठानी रे हरी ॥
बरसहु दया प्रेमघन इनकी मूरखता हरि हन सन रामा।
ह० देहु सुमति जो फिरै गोल बिल्लानी रे हरी० ॥ १३३ ॥

---

* चौक वा उन मुहल्लों के नाम जहाँ वेश्यायें रहती हैं।

त्रिकोन का मेला।

प्रधान प्रकार का पञ्चम विभेद।

आई सावन की बहार, विन्ध्याचल के पहार।
पर मेला मजेदार लगा, चलः चली यार॥
तिय सहित उमङ्ग, मिलि सखियन संग।
चलीं मनहुँ मतंग, किये सोरहौ सिंगार॥

चोली करौंदिया जरतारी, सारी धानी या जंगारी।
चादर गुल अब्बासी धारी, गातीं कजरी मलार।
पहिने बेसर बन्दी बाला, झूमड़ झूमक मोतीमाला।
कटि किंकिनी रसाला, पग पायल झनंकार॥

कहूं घूँघट उठाय, चन्द बदन दिखाय।
मन्द मन्द मुसुकाय, देत मोहनी सी डार॥
नैन मद मतवारे, रतनारे कजरारे।
बैन सरसे सुधारे, सैन मार देतीं मार॥

प्रेमी जुब जन भंग पिये, सजित सुढंग।
रँगे मदन के रङ्ग, संग लगे हिय हार॥
कोऊ कनपैं कराहैं, कोऊ भरैं ठण्डी आहैं।
कोऊ अड़े छेंकि राहैं, खड़े तड़ैं कोऊ तार॥

मेला इहि के समान, सैर सुखमें समान।
नहिं होत थल आन, देखि लेहु न विचार॥
प्रेमघन बरसावैं, अति आनन्द मचावैं।
मिरजापुरी सुभावैं, सब मंगल के बार* ॥ १३४॥

---

* अर्थात् सावन के प्रत्येक मङ्गलवार को यह पहाड़ी मेला होता है।

सामाजिक सङ्गीत ।

विनोद ।

तीसरे प्रकार को सामान्य अर्थ ।

पछलो हिन्दुस्तानी भाषा ।

अर्थात् मसलमानी हिंदी, अथवा खड़ी बोली ।

साँवर—गोरवा ।

मोहे न तोके पतलून साँवर गोरवा ॥
कोट, बूट, जाकट, कमीच क्यों पहिरि बने बैबून* सां० गो०

काली सूरत पर काला कपड़ा, देत किए रंग दून सा० गो० ।
अंगरेजी कपड़ा छोड़हु किनी, लगाय लगावः मुहेँ चून सां०

दाढ़ी रखिकै बार कटावत, और बढ़ाए नाख़ून सां० गो० ।
चलत चाल बिगड़ैल घोड़ सम, बोलत जैसे मजनून सां०गो० ॥

चन्दन तजि मुहँ ऊपर साबुन, काहें मलहु दुओ जून सां०गो० ।
चूसहु चुरुट लाख पर लागत, पान बिना मुहँ सून सां०गो० ॥

अच्छर चारि पढ़िहु अंगरेजी, बनि गयः अफ़लातून† सां०गो० ॥
मिलहि मेम तोहें कैसे, जेकर फ़ेयर फ़ेस लाइक द्री मून‡ सां०

---

* Baboon--एक प्रकार का बंदर ।

† Plato—वा حکیم افلاطون

‡ Fair face like the moon—उज्ज्वल मुख चंद्रमा सदृश ।

बिस्कुट, केक* कहा तू पैहय:, याम: चना भलें भूख सां०गो०
हियर† प्रेमघन हियर‡ दया कर गीत न गावो लैम्पून§सां०

दूसरी ।

गौरी गोरिया ।

पिया के तो लिहलीं लोभाय, गोरी गोरिया ॥
अँगरेजी पढ़ि गयनि बिलाइत, लौटत अवलैं लियाय गो०गो

काले साहेब भये निराले, अनमिल मेल मिलाय गो० गो०
जूठ निवाले खाँय, पियाले मद के पियहिँ, पियाय गो०गो०

लोक लाज कुलकानि धरम धन, जग मुख दिहिसि नसाय गो०
बनि लंगूर बँदरिया के सँग, नाचहिँ नाच रिझाय गो० गो०

करजौ काढ़ि नहीं धन अँटै, बरबस देइ उड़ाय गो० गो०
बिके दास बनिकै परबस, मन झीखत हुकुम बजाय गो० गो०

औरन सँग निज मेम प्रेम लखि, रोवहिँ कहि २ हाय! गो०गो
बनो जाल जंजाल प्रेमघन, छूटै न फन्द फँसाय गो०गो ॥१३६॥

चण्डू वन्दू ।

मद्यान प्रचार को सामान्य बन्ध ।

ब्रन्डू खाय २ गङ्ग झूम:, चन्डू पीय: हो चन्डूल ॥

---

*Cake—एक अंगरेजी मिठाई । †Dear—प्रिय । ‡Hear—सुनो ।
§Lampoon—उपहासात्मक कविता ॥

पीकर पिनक लेत ही, मानो रहे झूलना झूल
रंगत बनी अजब चेहरे की ज्यों गेंदे का फूल ॥
रोग अनेक दबाये बाढ़ी सॉस, साक औ सूल
बकरी सी सूरत बन, आँखें भईं लाल ज्यों तूल ॥
जो नहिं पावत, तो मुहँ बावत उठत करेजवां हूल
पैसे की तंगी से जीना झूसन हुआ फज़ूल ॥
मैली बदन सुरत जिन्नातो फिरत छानते धूल
चन्दू बाज धनी दानी कहँ मिलै यार अनकूल ॥ १३७ ॥

कुरीति ।

बाल्य विवाह ।

प्रधान प्रकार का पञ्चम विभेद ।

स्थानिक ग्राम्य स्त्री भाषा ।

भौंरा चकई बहाय, गुल्ली डण्डा बिसराय,
तनी नाचः इतराय, मोरे बारे बलँभू ।
करिहैंयवां हिलाय, औ भँउहँ मटकाय,
तालो दै के चमकाय, मोरे बारे बलँभू ।
खोंढ़ी दँतुली दिखाय, तनी तनी तुतराय,
गाय सोहर सुनाय मोरे बारे बलँभू ।
आवः यहर नगिचाय, घँघरी देई पहिराय,
सुन्दर ओढ़नी ओढ़ाय, मोरे बारे बलँभू ।
नैना काजर सुहाय, देई सेंदुर पहिराय
माथे टिकुली लगाय, मोरे बारे बलँभू ।

नई दुलही बनाय, गोदी लोइके उठाय,
कहैं चूमत खेलाय, मोरे बारे बलँभू।
पावै पावौं न उठाय छाती, बाल पिय पाय,
गोरी कहती सरमाय,—मोरे बारे बलँभू।
प्रेमघन अकुलाय, रस बिना बिलखाय,
कहै खिल्ली सी उड़ाय, मोरे बारे बलँभू। १३८ ॥

दूसरी।

दूसरे प्रकार का तृतीय विभेद।

अनमेल विवाह।

नैहर में दैबै बिताय बस बिरथा बैस जवानी रामा !
हरि! २ का करबै लै कै छोटा साजनवां रे हरी !!!
पापी पण्डित पामर पाधा गैलैं तिलक चढ़ावै रामा !
हरि! २ बनरा से बनरा के दिहेनि बयनवाँ रे हरी !
नहिँ कुल, रूप, नहीं गुन, विद्या, बुद्धि, सुभाव रसीला रा० !
हरि ! २ नहीं सजीला देखन जोग जवनवाँ रे हरी !
आय बरात दुआरे लागी आली ! चढ़ी अटारी रामा !
हरि ! २ देखि दूलहा मूखल मोरा परनवाँ रे हरी !
गावन लागीं बैरिन बुढ़िया लोग ब्याह की गीतैं रामा !
हरि ! २ बाजन लागे हाय ! ब्याह बाजनवाँ रे हरी !
सुनत प्रान अधरन सों लागे ब्याकुलता अति बाढ़ी रामा !

हरि ! २ भसम होत हिय भावै नहीं भावनवाँ रे ह० !

गोदी चढ़े दूध से पीयत दूलह ब्याहन आए रामा !
हरि ! २ लै बैठाये माड़व बीच अगनवाँ रे हरी !
बरबस पकरि नारि घिसियावैं पैर परै नहिं आगे रामा !
हरि ! २ नाहीं मानै हमरा कोऊ कहनवाँ रे हरी !
बूढ़े बेईमान बाप जी पूजन पाँव लगे हैं रामा !
हरि ! २ मानो उनके फूटे दोऊ नयनवाँ रे हरी !

पकरि हाथ संकल्पत बेचारी बेटी बेदरदी रामा !
हरि ! २ कैसे बचौ ! करौ अब कवन बहनवाँ रे हरी !
नहि उर दया, धरम नहिँ, लज्जा लोक लेस मन ल्यावै रा० ।
हरि ! २ बोरत बा ई जनम मोर दुसमनवां रे हरी !
बेचत गाय कसाई के कर ! केऊ हरकत नाहीं रामा !
हरि ! २ जुरे नात औ भाई सबै सयनवां रे हरी !

जोबन जोर जवानी के मद माती मैं अलबेली रामा !
हरि ! २ तेके हेरेनि बर बालक नादनवां रे हरी !
मारे डर के सूखै ! नजर मिलावै काउ बेचारा रामा !
हरि ! २ एही उचकायहु ना छुवै जोबनवां रे हरी !
धीर धरौं केहि भांति ! कहत कछु हम से बनै नहीं अब रा० !
हरि ! २ कैसे जाबै ! केकरे सँगे ! गवनवां रे हरी !

जथा जोग बर सुन्दर देय पिता मता लड़िकी के रामा !
हरि ! २ बरु न देय दयजा, कपड़ा गहनवां रे हरी !
मात पिता तौ धोखा दिहलेनि लखौ हाल दूलह को रा०

हरि ! २ रामचन्द्र अब तो तुहँईं सरनवां रे हरी !

काहु बिधि बीते मधु माधव मास कठिन रितु आई रा० !
हरि ! २ बोलन लागे मोरवा बनवां बनवां रे हरी !
चलिबे नीको लगो पवन पुरवाई बदरा छाये रामा !
हरि ! २ लागे अब तो हाय ! सरस सावनवाँ रे हरी !
लगो प्रान अगुतान कैसहूँ धीर धरो ना जाई रामा !
हरि ! २ मारन लागो मैन पैन बानवाँ रे हरी !
बरु विष खाय मरब ! मूलब हनि कारी करद करेजवाँ रा० !
हरि ! २ निकरि जाब को काहू के गौहनवाँ रे हरी !
ऐसे देस जाति कुल रीति नीति में है निबाह कै रामा !
हरि ! २ कहौ प्रेमघन दूसर कवन जतनवाँ ? रे हरी ! १३९

तीसरी ।

बाला वृद्ध विवाह ।

चलः हटः जिनि फाँसा पट्टी हमसे बहुत बघारः रामा ।
हरि २ फुसिलावः जिनि दै दै बुत्ता बाला रे हरी ॥
भोली गुनि भरमावः, काउ रिझावः ? हम ना रीझब रामा ।
हरि २ समुझावः जिनि कै २ बहुत कसाला रे हरी ॥
लालिच काउ दिखावः, हम ना पहिरब झुलनी झुमक रा० ।
हरि २ चम्पाकली, टीक, ना बुन्दा बाला रे हरी ॥
आगि लगै तोहरी जरतारी-सारी, लहँगा, चोली, रामा ।

हरि २ तुहकँ कँ धरि खाय नाग कहुँ काला रे हरी ॥
हम ना चाही राज पाट धन धाम तोहार गुलामी रामा।
हरि २ नावँ और के लिखः मकान कबाला रे हरी ॥

जिनि चुमकार पुचकारः, बसि बहुत प्रेम दिखलावः रा०।
हरि बिना काम जिन भरः आह औ नाला रे हरी ॥
असी बरिस के भयः बुढ़ तूँ, जेस हमार परपाजा रामा।
हरि २ हम बारहे बरिस कै अबहीं बाला रे हरी ॥

पापी बेईमान! भला तैं कुकरम कवन बिचारे रामा।
हरि २! लाज धरम सब धोय धाय पी हाला रे हरी ॥
जब लग चढ़ै जवानी हम पर तब तक तूँ मरि जाबयः रा०
हरि २ तब हमार फिर होयः कवन हवाला रे हरी ॥

फेरि कैसे मन मिलै कहः तौ, मुरदा औ जिन्दा कै रामा।
हरि २ होय प्रेम कैसे, जहँ रस कै टाला? रे हरी ॥
बुढ़ मरत्यः चिल्लू पानी मः, का मुहवाँ दिखलावः रामा।
हरि २ भल चाहः तौ "रटः राम लै माला" रे हरी।

बुढ़े प्रेमी सुजन प्रेमघन की सुनि सीख बिचारौ रामा।
हरि २ "तजौ बुढ़ाई में तौ गड़बड़ झाला" रे हरी ॥१४८॥

——— ० ———

जातीय गीत।

स्वदेश दशा।

तीसरे प्रकार की सामान्य लय।

स्वकीय सम्पादित "नागरी नीरद" साप्ताहिक समाचार पत्र से।

झीम।

है कैसी कजरी यह माई? भारत अम्बर ऊपर छाई॥
मूरखता, आलस, हठ के घन मिलि २ कुमति घटा घिरि आई।
बिलखत प्रजा बिलोकत छन २ चिन्ता अंधकार अधिकाई॥
बरसत बारि निरुद्यमता को, दारिद दामिनि दुति दरसाई।
दुख सरिता अति बेग सहित बढ़ि, धीरज बिपुल करार गिराई
परबसता तृन छाय लियो छिति, सुख मारग नहिँ परत लखाई
जरि जवास जातीय प्रेम को, बैर फूट फल भल फैलाई॥
छुधा रोग सों पीड़ित नर, दादुर लौं हाहाकार मचाई;
फेरि प्रेमघन गोबरधनधर! दौरि दया करि करहु सहाई॥१४१

ठूमरी।

प्रधान प्रकार की सामान्य लय।

गारत भयो भलैं भारत यह आरत रोय रह्यो बिल्लाय॥
बल को परम पराक्रम खोयो विद्या गरब नसाय।
मन मलीन धन हीन दीन ह्वै पर्यो बिबस बिलखाय॥
नहिँ मनु, व्यास, कणाद, पतञ्जलि गये शास्त्र जे गाय।
गौतम, शंकर हू नाहीं जे सोचैं कछू उपाय॥
नहिँ रघु, राम, कृष्ण, अर्जुन, कृप, भीषम भट समुदाय।

विक्रम, भोज, नन्द नहिं जे भुजबल इहि सके बचाय॥
नहिं रणजीत, शिवाजी, बापा, पृथिवी पृथिवीराय।
जे कछु वीर धीरता देते निज दिखाय तन घाय॥
गई अजुध्या, मथुरा, काशी, झूँसी दिल्ली हाय।
सोमनाथ के टुकड़े मक्के गज़नी पहुँचे जाय॥
नाम कियो म्लेच्छन बेपीरन भली भाँति तन ताय।
काको दुख लखि धीर धरे यह नाहिं कछू समुझाय॥
भये यहां के नर अधरमरत दास वृत्ति मन भाय।
कायर, कूर, कुमति, निलज्ज, आलसी, निरुद्यम आय॥
दुर्भागनि निद्रा सों निद्रित दीजै इन्हैं उठाय।
बरसहु दया प्रेमघन अब नारायन होहु सहाय॥ १४२॥

तीसरी।

जाहिल औ जंगली जानवर कायर कूर कुचाली रामा।
हरि २ हाय! कहावैं भारतवासी काला रे हरी॥
भये सकल नरमें पहिले जे सभ्य सूर सुखरासी रा०।
ह० २ सुजन सुजान सराहे विबुध विशाला रे हरी॥
सब विद्या के बीज बोय जिन सकल नरन सिखलाये रा०
ह० २ मूरख, परम नीच, ते अब गिनि जाला रे ह०॥
रतनाकर से रतनाकर जहँ धनी कुबेर सरीखे रामा।
ह० २ रहे, भये नर तहँ के अब कंगाला रे हरी॥
जाको सुजस प्रताप रह्यो चहुँ ओर जगत में छाई रा०।
ह० २ ते अब निबल सबै बिधि आज दिखाला रे हरी॥

सोई ससक, सृगाल सरिस अब सब सों लहैं निरादर रा०।
ह० २ संकित जग जिनके कर के करवाला रे हरी ॥
धर्म्म, ज्ञान, विज्ञान, शिल्प की रही जहाँ अधिकाई रा०।
ह० २ उमड़्यो जहँ आनन्द रहत नित आला रे हरी ॥
बिना परस्पर प्रेम प्रेमघन तहँ लखियत सब भाँतिन रा०।
ह० २ साँचे साँचे सुख को सचमुच टाला रे हरी ॥ १४३ ॥

चेतावनी।

ब्राह्मणार्थ।

चेतो हे २ बाभन भाई! सुधि बुधि काहे रहे गँवाय ॥
तुमरेई पुरखे मनु, पाणिनि, भृगु, कणाद, मुनिराय।
व्यास, पतञ्जलि, याज्ञवल्क्य, गुरु, गये शास्त्र जे गाय ॥
जैमिनि कपिल, भरत, पाराशर धन्वन्तरि, समुदाय।
भये विबुध विज्ञान प्रदर्शक तुमहिं सीख सिखलाय ॥
तपसी भरद्वाज, दुरवासा, शृङ्ग, पुलस्त्यहु आय।
भये भक्त नारद, सुक से, भजि हरि तन अघ बिनसाय॥
परसुराम, कृप, द्रोण, बीरवर निज बीरता दिखाय।
सुक्र, वसिष्ट, विष्णु, चाणक्, सुभ राजनीति प्रगटाय ॥
वालमीकि, भवभूति, बान, जय देव, नरायन चाय।
कालिदास आदिक कविवर, सत् कविता गये बनाय ॥
ताके बंस जनम लैकै तुम निज कुल रहे लजाय।
हाय! लोक परलोक सोक सब जनु पी गये उठाय ॥
करम, धरम, आचार, विचारहिं, मदा चार घर ढाय।
वेद, सास्त्र, तप, संसकार तजि बने निशाचर भाय ॥

निज करतब्य धरम तजि घूमत स्वारथ लोलुप धाय ।
धक्का खात घरहिँ घर माँगत भीख तऊ मुहँ बाय ॥
नाना अधम बृत्ति करि लै धन इकरहु खाय अघाय ।
हाय ! २ नहिँ लाज लेस हिय, नहिँ अपमान समाय ॥
देखहु जग सब अरि तुमरे जिय बिहँसत मोद बढ़ाय ।
खोदत जड़ तुमरी नित पै मन तुमरो नहिँ मुरझाय ॥
वेद विरुद्ध हाय ! भारत रह्यो कुपथन को तम छाय ।
पै तुम कहँ नहिँ सूझि परत कछु छिनहुँ न सोचौ याय ॥
बूड़त देस तुमारेहि आलस अधरम तापनि ताय ।
बिप्रबंस मिलि सबै प्रेमघन सोचहु बेगि उपाय ॥ ३८४ ॥

क्षत्रियार्थ ।

काहे रोवत हो छत्रीगन अपने करतब के फल पाय ॥
रघु, अज, राम, कृष्ण, अरजुन के निर्मल कुल मैं जाय ।
त्याग्यो उनको मारग तुम* भल चले कुपथ चित चाय ॥
तुमहिँ शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ह्वै जगजन बुधि बहकाय ।
निन्दा वेद, यज्ञ, द्विज, को करि दियो धरम विनसाय ॥
मिथ्या जीव दया दिखाय दियो देसहि निबल बनाय ।
बोयो बीज विरोध मलय निरुपद्रव में तुम लखाय ॥
चन्द्रगुप्त सम होन लगे नृप, यवनी रानी ल्याय ।
गयो तेज वह आरजता नसि सूद्र कहाये राय ॥
तुम असोक ह्वै बौद्ध, त्यागि मत वैदिक, ठाटनिठाय ।
साठ हजार द्विजन एकै दिन दीनो देस छुड़ाय ॥
कल्पित धरम प्रचार्‌यो निज सासन बल जगत जगाय ।

नास्यो हिंसाही संग हिम्मत. तेज, पराक्रम, हाय ! ॥
निबल होय जयचन्द पिथौरादिक गृह कलह बढ़ाय ।
टेरि आपु निज घर भरमाया सत्रुन दियो दिखाय ॥
लरि २ जीत २ परबल रिपु धन लै छोड़ो भाय ।
हारि कटायो सीस उनहिँ कर भारत गरब गँवाय ॥
धारि परस्पर वैर लड़े नहिँ इक सँग सन्मुख धाय ।
नास्यो धरम स्वतन्त्रता सबै कादरता प्रगटाय ॥
तुमरी भूलनि भला प्रेमघन गिनि कब सकै बताय ।
जैसो कियो सहो तैसो क्यों सोचहुँ सीस नमाय ॥ १४५ ॥

स्त्रियों की कीर्ति ॥

धनि २ भारत की भामिनियाँ जिनको सुजस रह्यो जग छाय ।
कमला, गौरी, गिरा, शची जिहि निरखि रहीं सकुचाय ॥
भईं गार्गी मैत्रेई मुनि पत्नी मुनिन हराय ।
विदुषी विपद ब्रह्म विद्या की तिय कुल मान बढ़ाय ॥
अरुन्धती, अनुसूया, लोपा मुद्रा प्रतिव्रत लाय ।
सावित्री, सीता, दमयन्ती, गन्धारी बरियाय ॥
सुदच्छिना, कौसिला, सुभद्रा, रुक्मिनि, द्रुपदी पाय ।
और नारि भट बधू जननि जिन गिन को सकै बताय ॥
कलि पद्मिनी पद्मिनी, कमलावती, तिनहिं कुल जाय ।
रूपवती, संयोगिता जगत अचरज दियो देखाय ॥
कर्म देवि, तारा, दुर्गावति, कर कृपान चमकाय ।
विजइनि, रच्छिनि, देश, प्रजा, चमको बनि अमर सुहाय ॥

धन्य जवाहिर बाई, नील देवि, साहस प्रगटाय।
छत्रानी, रानी गन धन्य, धन्य पन्ना सी धाय॥
धर्म बीर द्वादस सहस्र तिय संग बिलम्ब न लगाय।
बिरचि चितौर चिता करनावति भसम भई न बुझाय॥
रानि भवानि, अहिलया, मीरा, लछिमी बाई आय।
दया, दान, बैराग्य, भक्ति बैजन्ती दियो उड़ाय॥
राजप्रबन्धि प्रजा पालिनि उपकारनि जग दरसाय।
पति संग भसम भई तिनकी तौ कोटिन संख्या आय॥
लज्जा, दया, धर्म, पति सेवा रत सब सहज सुभाय।
अन्दनीयते सुगुखि प्रेमघन सब को सीस नवाय॥ १४६॥

उत्साह।

निज सम्पादित आनन्द कादम्बिनी मासिक पत्रिका से।

घिरी घटा सी फौज रूस मनहूस चढ़ी क्या आवै रामा।
हरि २ खेलो कजरी मिलि गोरा औ काला रे हरी॥
साफ़ करो बन्दूकैं, टोटा टोओ, ढाल सुधारो रामा।
हरि २ धरो सान तरवारन लै कर भाला रे हरी॥
ढीलढाल कपड़ा तजिकै सब पहिनो फौजी कुरती रा०।
हरि २ डीयर* वालेन्टीअर! सजो रिसाला रे हरी॥
दुनमुनिया सम सहज कवाइत करि जिय कसक मिटाओ रा०
हरि २ कजली लौं गाओ अब करखा आला रे हरी॥
मार! मार! हुँ कार सोर सुर सांचे अब ललकारो रामा।
ह० २ सत्रुन के सिर ऊपर दै सम-ताला रे हरी॥

[illegible] दिनन पर ई दिन आवा देव ताव मोछन पैं रा० ।
[illegible] २ सुभट समर मावनवाँ बीतल जाला रे हरी ॥
[illegible]ो बढ़ो धाओ धरि मारो बेगि न बिलम लगाओ रा० ।
[illegible] २ पड़ा कठिन कट्टर से अब तौ पाला रे हरी ॥
[illegible] धूम के स्याम सघन घन गरजैं तोप अवाजैं रामा ।
[illegible] २ गिरैं बज्र सम गोला बम्ब निराला रे हरी ॥
[illegible] बूँद सी बरसाओ अब गोली बन्दूकन सों रामा ।
[illegible] २ चमकाओ चपलासी कर करवाला रे हरी ॥
[illegible]हरैं मोर सरिस दादुर लौं बिलबिलायँ गिरि घायल रा०
[illegible] २ बिना मोल मनइन कै मूड़ बिचाला रे हरी ॥
[illegible]रो प्रेमघन भारत भारत मैं मिलि भारतबासी रामा ।
[illegible] २ महरानी का होय बोल औ बाला रे हरी ॥ १४८ ॥

आवश्यक निवेदन ।

प्रधान प्रकार की सामान्य लय ।

धावो भारतवासी भाई ! लागो गैयन की गोहार ॥
अन्न सुतन जाके उपजावत जोतन भूमि अपार ।
पियहु दूध घृत खाय जासु तुम सूतहु पाँय पसार ॥
दीन बचन उच्चरत चरत तृन करि उपकार हजार ।
अन्तहु मुएँ तुमैं बैतरनी आवत जाय उतार ।
सो तुमरी माता निरदोषी के गर फिरत कटार ।
देखत तुम पै तनिक न लाजत जिय मैं हा ! धिक्कार ॥

नगर नगर गोसाला खोलहु रच्छहु छिन निरधार ।
बरसहु दया प्रेमघन मिलि सब मानौ कही हमार ॥ १४९

आशीर्वाद ।

मङ्गल करै ईस भारत को सकल अमङ्गल बेगि बहाय ॥
आलस निद्रा सों उठि जागैं भारतबासी धाय ।
एका, सुमति, कला, विद्या, बल, तेज, स्वत्व निज पाय ॥
उद्यम पगे, धरमरत, उन्नति देस करैं चित चाय ।
दुःख कलंक धोय देवैं फिरि वेही दिन दिखलाय ॥
बरसहिँ जलद समय पर जल भल सस्य समृद्धि बढ़ाय ।
सुखी धेनु पय स्रवहिँ, सकै नहि कोऊ तिनहिँ सताय ॥
राजा नीति सहित राजैं नित प्रजा हरख अधिकाय ।
प्रेम परस्पर बढ़ै प्रेमघन हम यह रहे मनाय ॥ १५० ॥

